लघु शोध समीक्षा: प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन



- राजीव अग्रवाल
- प्रियंका गुप्ता

लघु शोध समीक्षा: प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल
डीन– शिक्षा संकाय
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

प्रियंका गुप्ता
एम. एस-सी. (वनस्पति विज्ञान), बी. एड.

लघु शोध समीक्षा: प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन

राजीव अग्रवाल
प्रियंका गुप्ता

E-book संस्करण: 2021

मूल्य: ₹79

ISBN: 978-93-5526-892-1

प्रकाशक:
प्रियंका गुप्ता
सिविल लाइन, अतर्रा, जिला—बाँदा, (उत्तर प्रदेश) 210201
Mob.: 9305983800
ई-मेल: priyankaguptabpmmmv@gmail.com

प्राक्कथन

अनुसन्धान किसी भी विषय में ज्ञान के विकास का आधार होता है। अनुसन्धान कार्य का वैज्ञानिक रूप से मूल्यांकन किया जाना आवश्यक होता है; बिना सम्यक् मूल्यांकन के इसके शैक्षिक निहितार्थों को सही प्रकार से लागू नहीं किया जा सकता। मूल्यांकन द्वारा ही अनुसन्धानकर्ता के परिश्रम से सभी अवगत होते हैं। मूल्यांकन से ही शोध की कमियाँ एवं अच्छाइयाँ उजागर होती हैं। शोध कार्य कितना वैध एवं विश्वसनीय है; इसका ज्ञान भी मूल्यांकन से ही होता है। किसी भी शोध कार्य के मूल्यांकन के निम्न उद्देश्य हो सकते हैं—

- शोध-प्रबन्ध की पर्याप्तता का आकलन।
- किसी भी अनुसन्धानकर्ता को एक व्यवस्थित तरीके से शोध कार्य सम्पादित करने हेतु मार्गदर्शन।
- विभिन्न शोध उपकरणों की विभिन्न परिस्थितियों में वैधता निर्धारण हेतु पूर्ववर्ती शोध की पहचान।
- एक अच्छे शोध-प्रबन्ध के निर्माण हेतु मार्गदर्शन।

प्रस्तुत पुस्तक एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध के मूल्यांकन पर आधारित है। प्रस्तुत पुस्तक का अध्यायीकरण निम्नवत है—

पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में शोध प्रतिवेदन का अर्थ, महत्व तथा समीक्षा किये जाने वाले लघु शोध-प्रबन्ध का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय भाग में लघु शोध-प्रबन्ध का मूल्यांकन निम्नलिखित 13 शीर्षकों के अन्तर्गत सारणी सहित किया गया है—

- प्रस्तावना
- सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा
- उद्देश्य एवं परिकल्पना
- शोध अभिकल्प
- अध्ययन के चर
- शोध उपकरण
- न्यादर्श
- प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण
- परिणाम एवं निहितार्थ
- निष्कर्ष एवं सारांश
- सन्दर्भ
- परिशिष्ट
- अन्य सूचक

प्रस्तुत पुस्तक के अन्तिम भाग में निष्कर्ष एवं सन्दर्भ का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य किसी व्यक्ति विशेष या शिक्षण संस्थान की आलोचना करना नहीं है, वरन् शिक्षा जगत में सुधार/उन्नयन हेतु एक प्रयास मात्र है।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अत: यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे, तो हम अत्यन्त आभारी होंगे।

27 नवम्बर, 2021

राजीव अग्रवाल
प्रियंका गुप्ता

विषय-वस्तु

शोध प्रतिवेदन (रिपोर्ट) का अर्थ-

किसी भी समस्या पर शोध (Research) करके उसका निष्कर्ष निकाल लेना ही महत्वपूर्ण नहीं होता है, बल्कि उसे एक वैज्ञानिक तरीके से प्रतिवेदित करना भी उसका मुख्य उद्देश्य होता है। प्रतिवेदन तैयार करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि उसके प्रस्तुतीकरण का स्वरूप इतना विस्तृत न हो कि उसमें अनावश्यक सूचनाएँ भर जायें और यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह इतना संक्षिप्त भी न हो कि उसमें आवश्यक सूचनाएँ आने से रह जायें। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रतिवेदन इस प्रकार का हो कि उसमें संघटित रूप से शोध से सम्बन्धित सभी आवश्यक सुचनाएँ अवश्य आ जायें।

शोध प्रतिवेदन एक अच्छी तरह से तैयार किया गया दस्तावेज है, जो एक व्यवस्थित जाँच की प्रक्रियाओं, आंकड़ों और निष्कर्षों की रूपरेखा तैयार करता है। यह एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है जो सर्वप्रथम अनुसन्धान प्रक्रिया के रूप में कार्य करता है और इसे आमतौर पर सूचना के उद्देश्य और सटीक स्रोत के रूप में माना जाता है।

एक शोध रिपोर्ट को शोध प्रक्रिया के सारांश के रूप में माना जा सकता है, जो निष्कर्षों, सिफारिशों और अन्य महत्वपूर्ण विवरणों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

शोध रिपोर्ट एक आयोजित शोध के बारे में विवरणों का ब्यौरा प्रस्तुत करने के लिए एक विश्वसनीय स्रोत है, जिसे अनुसन्धान की विशिष्टताओं को पूरा करने के लिए संचित किए गए सभी कार्यों का एक सच्चा प्रमाण माना जाता है।

सरल शब्दों में,

शोध रिपोर्ट एक लिखित रूप में शोध कार्य की स्पष्ट और व्यवस्थित प्रस्तुति है।

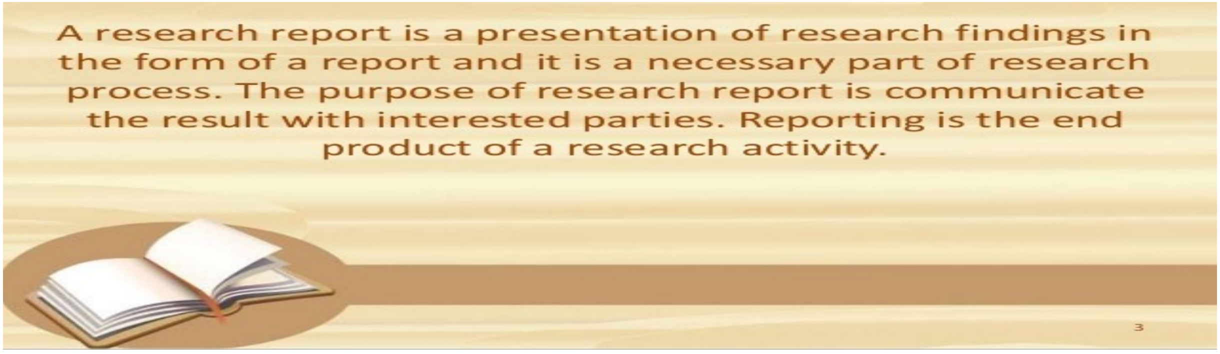


शोध प्रतिवेदन शोधार्थी द्वारा किये गए कार्य का संक्षिप्त रूप या संक्षिप्त वर्णन है। इसमें शोध अथवा लघु-शोध प्रबंध के रूप में प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न चरण शामिल होते हैं।

शोध प्रतिवेदन में शोध के उद्देश्य, क्षेत्र, प्रविधियाँ, संकलित तथ्यों का विवरण, विश्लेषण, व्याख्या और निष्कर्ष आदि को लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जब तक शोधार्थी अपना शोध लिखित रूप में प्रस्तुत नहीं करता; तब तक शोध कार्य पूर्ण नहीं माना जाता है। शोध प्रतिवेदन तैयार करना शोध प्रक्रिया का अंतिम चरण है। इसका उद्देश्य जिज्ञासु लोगों तक शोध के बारे में व्यवस्थित, विस्तृत और लिखित परिणाम पहुँचाना होता है। प्रतिवेदन

द्वारा ही शोध सम्मत ज्ञान दूसरों तक पहुँचाया जाता है। हर एक अनुसंधान में शोध प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की विशेष शैली होती है।





शोध प्रतिवेदन का महत्व-

- ज्ञान का स्थानान्तरण
- ज्ञान अन्तराल की पहचान


1. Research report communicate the problem, the method, facts, the conclusions and their interrelationships.
2. It serves as a reference material for future use.
3. It reveals the research ability of the researcher.
4. It is useful to policy makers and administrators for taking decisions and policies.
5. It provides systematic knowledge on problems and issues analyzed.
4

लघु शोध परिचय—

प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी, को मास्टर ऑफ एजूकेशन उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

2018-20

शोध निर्देशक
श्री योगेन्द्र सिंह
असि0 प्रोफेसर

शोधकत्री
शिखा सिंह
एम0एड0(छात्रा)

शिक्षक-शिक्षा संकाय
राजा देवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

शीर्षक: प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन

शोधकर्त्री: शिखा सिंह

शोध पर्यवेक्षक: योगेन्द्र सिंह

वर्ष: 2020

उपाधि: एम०एड०

महाविद्यालय: राजा देवी पी.जी. कॉलेज, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

विश्वविद्यालय: बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

अध्यायीकरण:

अनुक्रमणिका

लघु शोध-प्रबन्ध मूल्यांकन—

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score rule (Points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
1	**Introduction**	**Max Score=6**		
1.1.	Is the problem clearly stated?	NO		0
1.2.	Is the problem selected appropriately?	YES		1
1.3.	Is the problem relevant?	YES		1
1.4.	Is the problem important?	YES		1
1.5.	Is the problem researchable?	YES		1
1.6.	Are the related areas of the problem discussed satisfactorily?	NO		0
	Sub Total	**Actual Max=**		4

Comments:

1.1. समस्या कथन सही रूप से वर्णित नहीं है-

समस्या कथन-

“प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन करना”

समस्या कथन निम्नवत होना चाहिए-

“बाँदा जनपद में प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन”

अथवा

“प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन: बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में”

नोट- समस्या कथन विशिष्ट तथा स्पष्ट होना चाहिए।

1.2. वर्तमान समय की आवश्यकताओं को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि चुनी गयी समस्या उपयुक्त है।

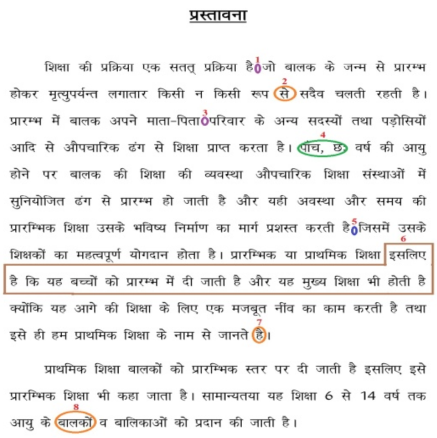
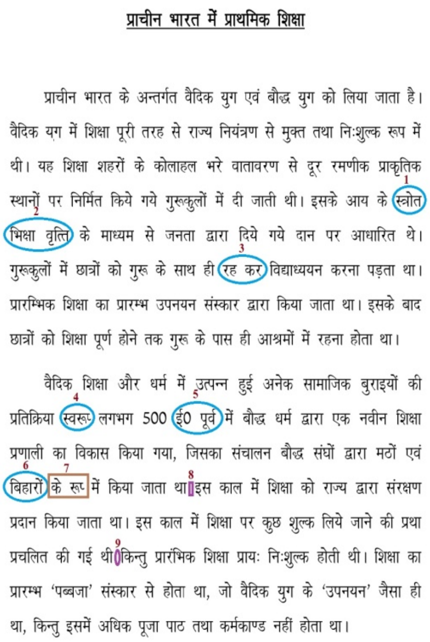
1.3. चुनी गयी समस्या वर्तमान समय की आवश्यकत है। प्राचीन समय से अब तक अपव्यय-अवरोधन की समस्या पर बहुत सारे शोध कार्य किए जा चुके हैं; जो शोध कार्य समाप्त होने के उपरान्त निष्क्रिय हो जाते हैं। आज इस समस्या से सम्बन्धित क्षेत्र में और अधिक शोध कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

1.4. प्राथमिक स्तर पर अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या महत्वपूर्ण है।

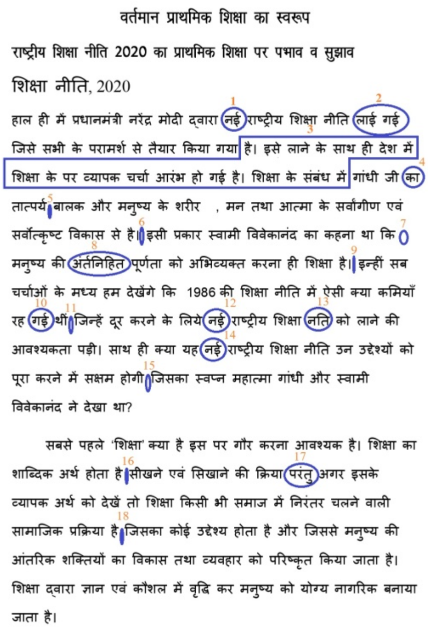
1.5. चुनी गयी समस्या शोध करने के योग्य है।

1.6. चुनी गयी समस्या से सम्बन्धित समस्त पहलुओं का सही प्रकार से विवेचन नहीं किया गया है। समस्या से सम्बन्धित पहलुओं- अपव्यय एवं अवरोधन और प्राथमिक स्तर के विषय में तो विवेचन प्रस्तुत किया गया है, किन्तु बाँदा जनपद के विषय में विवेचन प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रस्तावना में प्रयुक्त हुए गलत शब्दों के सही रूप -

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
प्रस्तावना
शिक्षा की प्रक्रिया एक सतत् प्रक्रिया है जो बालक के जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्युपर्यन्त लगातार किसी न किसी रूप से सदैव चलती रहती है। प्रारम्भ में बालक अपने माता-पिता परिवार के अन्य सदस्यों तथा पड़ोसियों आदि से औपचारिक ढंग से शिक्षा प्राप्त करता है। पांच, छः वर्ष की आयु होने पर बालक की शिक्षा की व्यवस्था औपचारिक शिक्षा संस्थाओं में सुनियोजित ढंग से प्रारम्भ हो जाती है और यही अवस्था और समय की प्रारम्भिक शिक्षा उसके भविष्य निर्माण का मार्ग प्रशस्त करती है जिसमें उसके शिक्षकों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। प्रारम्भिक या प्राथमिक शिक्षा इसलिए है कि यह बच्चों को प्रारम्भ में दी जाती है और यह मुख्य शिक्षा भी होती है क्योंकि यह आगे की शिक्षा के लिए एक मजबूत नींव का काम करती है तथा इसे ही हम प्राथमिक शिक्षा के नाम से जानते है।
प्राथमिक शिक्षा बालकों को प्रारम्भिक स्तर पर दी जाती है इसलिए इसे प्रारम्भिक शिक्षा भी कहा जाता है। सामान्यतया यह शिक्षा 6 से 14 वर्ष तक आयु के बालकों व बालिकाओं को प्रदान की जाती है।</td><td>1. ,
2. में
3. ,
4. 5-6
5. ,
6. बच्चों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है,
7. हैं
8. बालक</td></tr>
<tr><td>
प्राचीन भारत में प्राथमिक शिक्षा
प्राचीन भारत के अन्तर्गत वैदिक युग एवं बौद्ध युग को लिया जाता है। वैदिक यग में शिक्षा पूरी तरह से राज्य नियंत्रण से मुक्त तथा निःशुल्क रूप में थी। यह शिक्षा शहरों के कोलाहल भरे वातावरण से दूर रमणीक प्राकृतिक स्थानों पर निर्मित किये गये गुरूकुलों में दी जाती थी। इसके आय के स्त्रोत भिक्षा वृत्ति के माध्यम से जनता द्वारा दिये गये दान पर आधारित थे। गुरूकुलों में छात्रों को गुरू के साथ ही रह कर विद्याध्ययन करना पड़ता था। प्रारम्भिक शिक्षा का प्रारम्भ उपनयन संस्कार द्वारा किया जाता था। इसके बाद छात्रों को शिक्षा पूर्ण होने तक गुरू के पास ही आश्रमों में रहना होता था।
वैदिक शिक्षा और धर्म में उत्पन्न हुई अनेक सामाजिक बुराइयों की प्रतिक्रिया स्वरूप लगभग 500 ई0 पूर्व में बौद्ध धर्म द्वारा एक नवीन शिक्षा प्रणाली का विकास किया गया, जिसका संचालन बौद्ध संघों द्वारा मठों एवं बिहारों के रूप में किया जाता था इस काल में शिक्षा को राज्य द्वारा संरक्षण प्रदान किया जाता था। इस काल में शिक्षा पर कुछ शुल्क लिये जाने की प्रथा प्रचलित की गई थी किन्तु प्रारंभिक शिक्षा प्रायः निःशुल्क होती थी। शिक्षा का प्रारम्भ 'पब्बजा' संस्कार से होता था, जो वैदिक युग के 'उपनयन' जैसा ही था, किन्तु इसमें अधिक पूजा पाठ तथा कर्मकाण्ड नहीं होता था।</td><td>1. स्रोत
2. भिक्षावृत्ति
3. रहकर
4. स्वरूप
5. ई.पू.
6. विहारों
7. निरर्थक शब्द
8. ।
9. ,</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
मध्ययुग में प्राथमिक शिक्षा
[1]सन 1200 से लेकर 1700 ई0 तक के काल को मुस्लिम काल कहा जाता है। इसे मध्य युग के नाम से भी जाना जाता है। इस काल तक [2]भार में वैदिक शिक्षा एवं बौद्ध शिक्षा का प्रभाव बहुत कम रह गया था। यहाँ मुस्लिम शासकों का राज्य होने के कारण ‘मकतबों’ और ‘मदरसों’ में दी जाने वाली ‘मुस्लिम शिक्षा पद्धति’ उस समय की प्रमुख शिक्षा प्रणाली थी। मुस्लिम शिक्षा के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा ‘मकतबों’ में तथा उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी। यह शिक्षा प्राथमिक स्तर तक सभी बालक-बालिकाओं के लिये निःशुल्क व अनिवार्य थी। इसमें धार्मिक मुस्लिम साहित्य का अध्ययन कराया जाता था। तथा छात्रों का नैतिक-चारित्रिक विकास इस्लामी संस्कृति के अनुसार किया जाता था।
आधुनिक युग की प्राथमिक शिक्षा
भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रारम्भ ईसाई मिशनरियों द्वारा सन् 1813 के मध्य किया था। सन् 1813 में ब्रिटिश राजपत्र में भारत में शिक्षा के विकास के एक लाख रूपये व्यय करने को स्वीकृति प्रदान की गई थी। इसके बाद 1835 में लार्ड मैकाले ने भारतीय शिक्षा के भाग्य का निर्धारण किया। 1854 में [3]बुड घोषणा-पत्र में प्रदान की गई [4]सहायता अनुदान व्यवस्था के माध्यम से यहाँ की प्राथमिक शिक्षा में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये। लार्ड कर्जन ने 1901 से 1904 के मध्य अपनी शिक्षा नीति के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा की अनेक समस्याओं का अध्ययन किया।
</td><td>
1. सन्
2. भारत
3. वुड
4. निरर्थक शब्द
</td></tr>
<tr><td>
प्रसिद्ध [1]राजनीतिक नेता और [2]शिक्षाविद श्री [3]गापाल कृष्ण गोखले[4] ने 1911 में प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य करने के लिए [4]अपना प्रसिद्ध ‘गोखले बिल’ प्रस्तुत किया। इसके पूर्व 1882 में हण्टर कमीशन ने प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम[5] शिक्षक-प्रशिक्षण और वित्तीय प्रबन्ध के विषय में अनेक उपयोगी सुझाव दिये थे। 1927 में हर्टाग समिति ने भी प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया। ब्रिटिश काल में प्राथमिक शिक्षा में सुधार का अन्तिम प्रयास 1944 में [6]सार्जैण्ट के प्रतिवेदन के रूप में सामने आया। इसी काल में 1937 में महात्मा गाँधी ने अपनी वर्धा शिक्षा योजना के माध्यम से प्रारम्भिक शिक्षा [7]के क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया [8]था।
स्वतन्त्रता के बाद प्राथमिक शिक्षा
स्वतन्त्रता प्राप्ति के लगभग सत्रह वर्ष बाद भारत में प्राथमिक शिक्षा में सुधार के लिए पहला उल्लेखनीय प्रयास कोठारी आयोग के [9]रूप में किया गया। इस आयोग ने शिक्षा की एक राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता बताते हुए शिक्षा के लगभग सभी स्तरों के लिए एक व्यापक योजना का निर्माण किया। इसी के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा के लिये भी अनेक बहुमूल्य एवं उपयोगी सुझाव दिये गये [10]थे। इसी [11]आयेग से प्रभावित होकर 1986 में एक राष्ट्रीय शिक्षा नोति की घोषणा की [12]गई जिसे [13]‘नई शिक्षा नीति’ के नाम से भी जाना जाता है। हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था आज लगभग पूरी तरह से इसी शिक्षा नीति के आधार पर संचालित की जा रही है।
</td><td>
1. निरर्थक शब्द
2. शिक्षाविद्
3. गोपाल
4. एक बिल प्रस्तुत किया, जिसे 'गोखले बिल' के नाम से जाना जाता है।
5. ,
6. सार्जेण्ट
7. में
8. निरर्थक शब्द
9. द्वारा
10. निरर्थक शब्द
11. आयोग
12. गयी
13. नयी
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


वर्तमान प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप

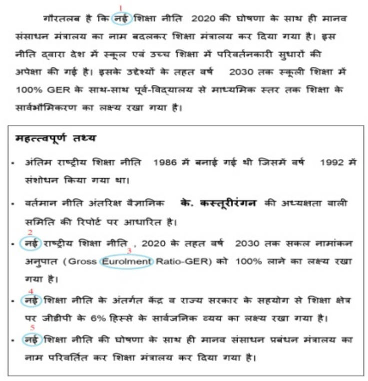
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्राथमिक शिक्षा पर पभाव व सुझाव

शिक्षा नीति, 2020

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा [1] नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति [2] लाई गई जिसे सभी के परामर्श से तैयार किया गया [3] है। इसे लाने के साथ ही देश में शिक्षा के पर व्यापक चर्चा आरंभ हो गई है। शिक्षा के संबंध में गांधी जी [4] का तात्पर्य [5] बालक और मनुष्य के शरीर , मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। [6] इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद का कहना था कि [7] मनुष्य की [8] अंर्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। [9] इन्हीं सब चर्चाओं के मध्य हम देखेंगे कि 1986 की शिक्षा नीति में ऐसी क्या कमियाँ रह [10] गई थीं [11] जिन्हें दूर करने के लिये [12] नई राष्ट्रीय शिक्षा [13] नति को लाने की आवश्यकता पड़ी। साथ ही क्या यह [14] नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होगी [15] जिसका स्वप्न महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद ने देखा था?

सबसे पहले 'शिक्षा' क्या है इस पर गौर करना आवश्यक है। शिक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है [16] सीखने एवं सिखाने की क्रिया [17] परंतु अगर इसके व्यापक अर्थ को देखें तो शिक्षा किसी भी समाज में निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है [18] जिसका कोई उद्देश्य होता है और जिससे मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास तथा व्यवहार को परिष्कृत किया जाता है। शिक्षा द्वारा ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाया जाता है।
</td><td>

1. नयी
2. लायी गयी
3. निरर्थक शब्द
4. के अनुसार शिक्षा से
5. -"
6. "
7. -"
8. अन्तर्निहित
9. "
10. गयी
11. ?
12. नयी
13. नीति
14. नयी
15. ,
16. –
17. । (निरर्थक शब्द)
18. ,

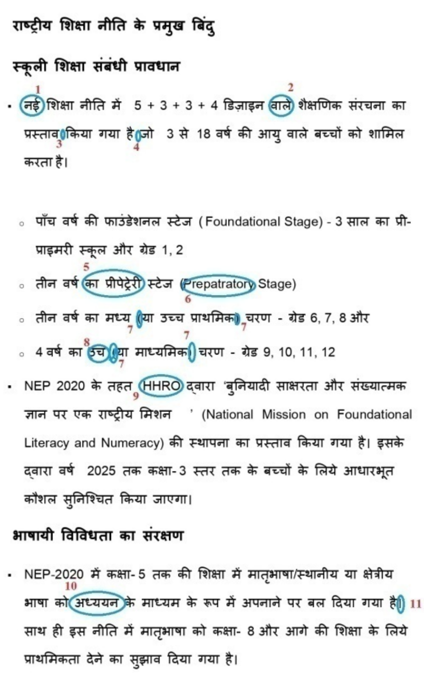
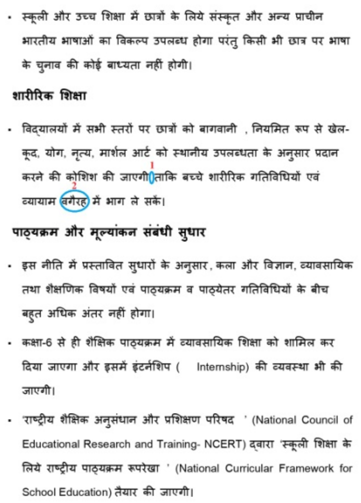
नोट- इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषाओं का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है, जोकि किया जाना चाहिए।
</td></tr>
<tr><td>


गौरतलब है कि [1] नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। इस नीति द्वारा देश में स्कूल एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों की अपेक्षा की गई है। इसके उद्देश्यों के तहत वर्ष 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100% GER के साथ-साथ पूर्व-विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य रखा गया है।

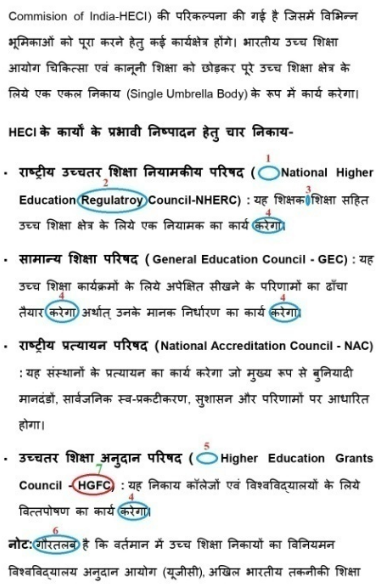
महत्त्वपूर्ण तथ्य

- अंतिम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में बनाई गई थी जिसमें वर्ष 1992 में संशोधन किया गया था।
- वर्तमान नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक **के. कस्तूरीरंगन** की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।
- [2] नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति , 2020 के तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात (Gross [3] Eurolment Ratio-GER) को 100% लाने का लक्ष्य रखा गया है।
- [4] नई शिक्षा नीति के अंतर्गत केंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर जीडीपी के 6% हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है।
- [5] नई शिक्षा नीति की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय का नाम परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है।
</td><td>

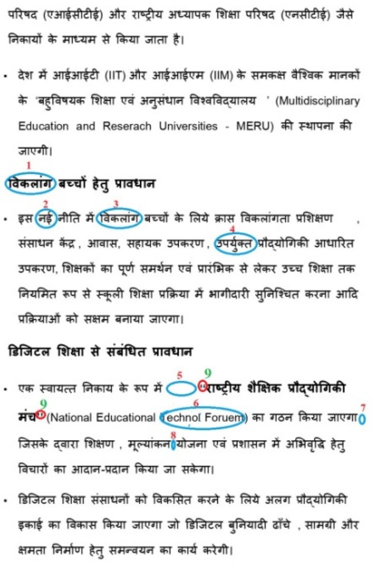
1. नयी
2. नयी
3. enrolment
4. नयी
5. नयी
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख बिंदु
स्कूली शिक्षा संबंधी प्रावधान
• नई शिक्षा नीति में 5 + 3 + 3 + 4 डिज़ाइन वाले शैक्षणिक संरचना का प्रस्ताव किया गया है जो 3 से 18 वर्ष की आयु वाले बच्चों को शामिल करता है।
○ पाँच वर्ष की फाउंडेशनल स्टेज (Foundational Stage) - 3 साल का प्री-प्राइमरी स्कूल और ग्रेड 1, 2
○ तीन वर्ष का प्रीपेट्रेरी स्टेज (Prepatratory Stage)
○ तीन वर्ष का मध्य (या उच्च प्राथमिक) चरण - ग्रेड 6, 7, 8 और
○ 4 वर्ष का उच (या माध्यमिक) चरण - ग्रेड 9, 10, 11, 12
• NEP 2020 के तहत HHRO द्वारा 'बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन ' (National Mission on Foundational Literacy and Numeracy) की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है। इसके द्वारा वर्ष 2025 तक कक्षा-3 स्तर तक के बच्चों के लिये आधारभूत कौशल सुनिश्चित किया जाएगा।
भाषायी विविधता का संरक्षण
• NEP-2020 में कक्षा-5 तक की शिक्षा में मातृभाषा/स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को अध्ययन के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही इस नीति में मातृभाषा को कक्षा- 8 और आगे की शिक्षा के लिये प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।</td><td>1. नयी
2. वाली
3. शामिल
4. ,
5. की प्रि'पैरट्रि
6. preparatory
7. कोष्ठक का अनुचित प्रयोग
8. उच्च
9. MHRD
10. अध्यापन
11. ,</td></tr>
<tr><td>
• स्कूली और उच्च शिक्षा में छात्रों के लिये संस्कृत और अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओं का विकल्प उपलब्ध होगा परंतु किसी भी छात्र पर भाषा के चुनाव की कोई बाध्यता नहीं होगी।
शारीरिक शिक्षा
• विद्यालयों में सभी स्तरों पर छात्रों को बागवानी , नियमित रूप से खेल-कूद, योग, नृत्य, मार्शल आर्ट को स्थानीय उपलब्धता के अनुसार प्रदान करने की कोशिश की जाएगी ताकि बच्चे शारीरिक गतिविधियों एवं व्यायाम वगैरह में भाग ले सकें।
पाठ्यक्रम और मूल्यांकन संबंधी सुधार
• इस नीति में प्रस्तावित सुधारों के अनुसार, कला और विज्ञान, व्यावसायिक तथा शैक्षणिक विषयों एवं पाठ्यक्रम व पाठ्येतर गतिविधियों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होगा।
• कक्षा-6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल कर दिया जाएगा और इसमें इंटर्नशिप (Internship) की व्यवस्था भी की जाएगी।
• 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ' (National Council of Educational Research and Training- NCERT) द्वारा 'स्कूली शिक्षा के लिये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा ' (National Curricular Framework for School Education) तैयार की जाएगी।</td><td>1. ,
2. आदि
नोट- मानक शब्दावली (खड़ी बोली) का प्रयोग किया जाना चाहिए।</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
▪ छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा- 10 और कक्षा-12 की परीक्षाओं में बदलाव किया जाएगा। इसमें भविष्य में [1] समेस्टर या बहुविकल्पीय प्रश्न आदि जैसे सुधारों को शामिल किया जा सकता है। ▪ छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिये मानक-निर्धारक निकाय के रूप में 'परख' (PARAKH) नामक एक नए 'राष्ट्रीय आकलन केंद्र ' (National Assessment Centre) की स्थापना की जाएगी। ▪ छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन तथा छात्रों को अपने भविष्य से जुड़े निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने के लिये 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता ' (Artificial Intelligence- AI) आधारित सॉफ्टवेयर का प्रयोग। **शिक्षण व्यवस्था से संबंधित सुधार** ▪ शिक्षकों की नियुक्ति में प्रभावी और पारदर्शी प्रक्रिया का पालन तथा समय-समय पर किये गए कार्य-प्रदर्शन आकलन के आधार पर पदोन्नति। ▪ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा वर्ष 2022 तक 'शिक्षकों के लिये राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक ' (National Professional Standards for Teachers- NPST) का विकास किया जाएगा। ▪ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा NCERT के परामर्श के आधार पर 'अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा [2] ' [National Curriculum Framework for Teacher Education [3] NCFTE) का विकास किया जाएगा। ▪ वर्ष 2030 तक अध्यापन के लिये न्यूनतम डिग्री योग्यता 4-वर्षीय एकीकृत बी.एड. डिग्री का होना अनिवार्य किया जाएगा।	1. सेमेस्टर 2. अनुचित/अधिक खाली स्थान का प्रयोग 3. NCFTE, 2021
उच्च शिक्षा से संबंधित प्रावधान ▪ NEP-2020 के तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में 'सकल नामांकन अनुपात' (Gross Enrolment Ratio) को 26.3% (वर्ष 2018) से बढ़ाकर 50% तक करने का लक्ष्य रखा गया है, इसके साथ ही देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में 3.5 करोड़ [1] नई सीटों को जोड़ा जाएगा। ▪ NEP-2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम में मल्टीपल एंट्री एंड एक्ज़िट व्यवस्था को अपनाया गया है , इसके तहत 3 या 4 वर्ष के स्नातक कार्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हें उसी के अनुरूप डिग्री या प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा (1 वर्ष के बाद प्रमाण-पत्र, 2 वर्षों के बाद एडवांस डिप्लोमा, 3 वर्षों के बाद स्नातक की डिग्री तथा 4 वर्षों के बाद शोध के साथ स्नातक)। ▪ विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से प्राप्त अंकों या क्रेडिट को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखने के लिये एक 'एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट ' (Academic Bank of Credit) दिया जाएगा, ताकि अलग-अलग संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हें डिग्री प्रदान की जा सके। ▪ [2] नई शिक्षा नीति के तहत एम.फिल. ([3] M.Phil) कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया। **भारतीय उच्च शिक्षा आयोग** [4] नई शिक्षा नीति (NEP) में देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिये एक एकल नियामक अर्थात् भारतीय उच्च शिक्षा परिषद ([5] Higher Education	1. नयी 2. नयी 3. M. Phil. 4. नयी 5. अनुचित/अधिक खाली स्थान का प्रयोग

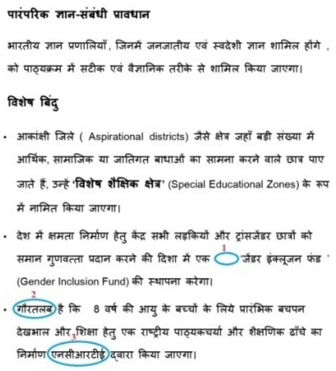
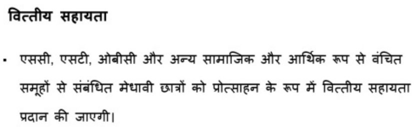
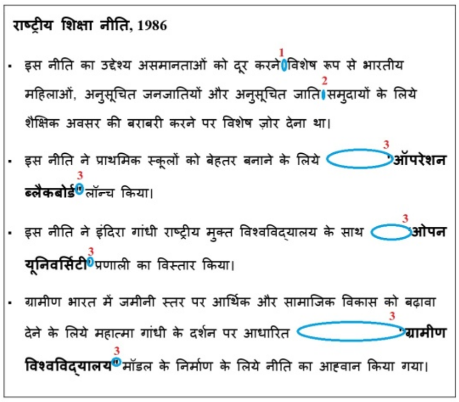
<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
Commision of India-HECI) की परिकल्पना की गई है जिसमें विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करने हेतु कई कार्यक्षेत्र होंगे। भारतीय उच्च शिक्षा आयोग चिकित्सा एवं कानूनी शिक्षा को छोड़कर पूरे उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिये एक एकल निकाय (Single Umbrella Body) के रूप में कार्य करेगा।

HECI के कार्यों के प्रभावी निष्पादन हेतु चार निकाय-
- **राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामकीय परिषद** (National Higher Education Regulatroy Council-NHERC) : यह शिक्षक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिये एक नियामक का कार्य करेगा।
- **सामान्य शिक्षा परिषद** (General Education Council - GEC) : यह उच्च शिक्षा कार्यक्रमों के लिये अपेक्षित सीखने के परिणामों का ढाँचा तैयार करेगा अर्थात् उनके मानक निर्धारण का कार्य करेगा।
- **राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद** (National Accreditation Council - NAC) : यह संस्थानों के प्रत्यायन का कार्य करेगा जो मुख्य रूप से बुनियादी मानदंडों, सार्वजनिक स्व-प्रकटीकरण, सुशासन और परिणामों पर आधारित होगा।
- **उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद** (Higher Education Grants Council - HGFC) : यह निकाय कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के लिये वित्तपोषण का कार्य करेगा।

नोट: गौरतलब है कि वर्तमान में उच्च शिक्षा निकायों का विनियमन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा</td>
<td>1. अनुचित/अधिक खाली स्थान का प्रयोग
2. Regulatory
3. –
4. करेगी
5. अनुचित/अधिक खाली स्थान का प्रयोग
6. यह ध्यान देने योग्य
7. HEGC</td></tr>
<tr><td>
परिषद (एआईसीटीई) और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) जैसे निकायों के माध्यम से किया जाता है।
- देश में आईआईटी (IIT) और आईआईएम (IIM) के समकक्ष वैश्विक मानकों के 'बहुविषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय ' (Multidisciplinary Education and Reserach Universities - MERU) की स्थापना की जाएगी।

विकलांग बच्चों हेतु प्रावधान
- इस नई नीति में विकलांग बच्चों के लिये क्रास विकलांगता प्रशिक्षण , संसाधन केंद्र , आवास, सहायक उपकरण , उपर्युक्त प्रौद्योगिकी आधारित उपकरण, शिक्षकों का पूर्ण समर्थन एवं प्रारंभिक से लेकर उच्च शिक्षा तक नियमित रूप से स्कूली शिक्षा प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करना आदि प्रक्रियाओं को सक्षम बनाया जाएगा।

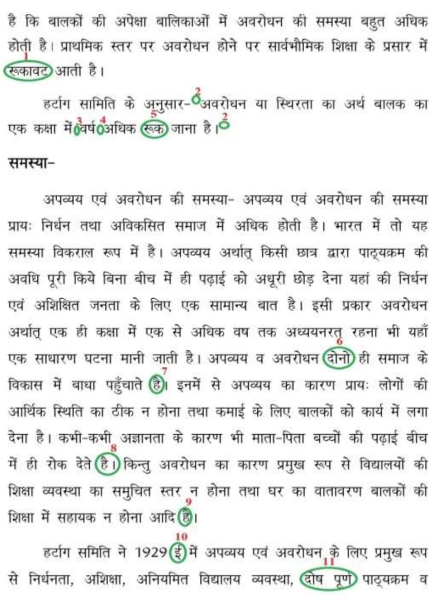
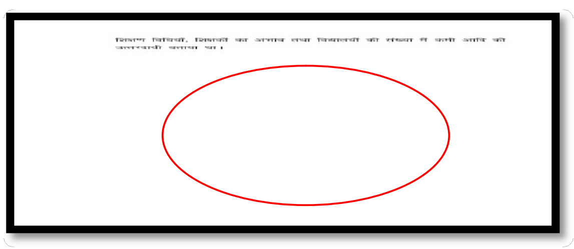
डिजिटल शिक्षा से संबंधित प्रावधान
- एक स्वायत्त निकाय के रूप में "**राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच**" (National Educational echnol Foruem) का गठन किया जाएगा जिसके द्वारा शिक्षण , मूल्यांकन योजना एवं प्रशासन में अभिवृद्धि हेतु विचारों का आदान-प्रदान किया जा सकेगा।
- डिजिटल शिक्षा संसाधनों को विकसित करने के लिये अलग प्रौद्योगिकी इकाई का विकास किया जाएगा जो डिजिटल बुनियादी ढाँचे , सामग्री और क्षमता निर्माण हेतु समन्वयन का कार्य करेगी।</td>
<td>1. दिव्यांग
2. नयी
3. दिव्यांग
4. उपयुक्त
5. अनुचित/अधिक खाली स्थान का प्रयोग
6. Technology Forum - NETF
7. ।
8. ,
9. अनुचित inverted comma का प्रयोग।
Note: Highlight करने के लिए Bold एवं single inverted comma में से किसी एक का प्रयोग किया जाना चाहिए।</td></tr>
</table>

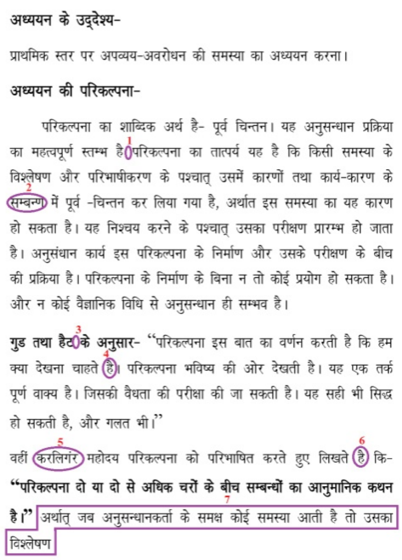
अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 **पारंपरिक ज्ञान-संबंधी प्रावधान** भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ, जिनमें जनजातीय एवं स्वदेशी ज्ञान शामिल होंगे , को पाठ्यक्रम में सटीक एवं वैज्ञानिक तरीके से शामिल किया जाएगा। **विशेष बिंदु** • आकांक्षी जिले (Aspirational districts) जैसे क्षेत्र जहाँ बड़ी संख्या में आर्थिक, सामाजिक या जातिगत बाधाओं का सामना करने वाले छात्र पाए जाते हैं, उन्हें '**विशेष शैक्षिक क्षेत्र**' (Special Educational Zones) के रूप में नामित किया जाएगा। • देश में क्षमता निर्माण हेतु केंद्र सभी लड़कियों और ट्रांसजेंडर छात्रों को समान गुणवत्ता प्रदान करने की दिशा में एक [1] 'जेंडर इंक्लूजन फंड ' (Gender Inclusion Fund) की स्थापना करेगा। • [2] गौरतलब है कि 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिये प्रारंभिक बचपन देखभाल और,शिक्षा हेतु एक राष्ट्रीय पाठ्यकचर्या और शैक्षणिक ढाँचे का निर्माण [3] एनसीआरटीई द्वारा किया जाएगा।	1. अनुचित/अधिक खाली स्थान का प्रयोग 2. ध्यातव्य 3. NCERT
 **वित्तीय सहायता** • एससी, एसटी, ओबीसी और अन्य सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों से संबंधित मेधावी छात्रों को प्रोत्साहन के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।  **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986** • इस नीति का उद्देश्य असमानताओं को दूर करने [1] विशेष रूप से भारतीय महिलाओं, अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जाति [2] समुदायों के लिये शैक्षिक अवसर की बराबरी करने पर विशेष ज़ोर देना था। • इस नीति ने प्राथमिक स्कूलों को बेहतर बनाने के लिये [3] **ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड** [3] लॉन्च किया। • इस नीति ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के साथ [3] **ओपन यूनिवर्सिटी** [3] प्रणाली का विस्तार किया। • ग्रामीण भारत में ज़मीनी स्तर पर आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने के लिये महात्मा गांधी के दर्शन पर आधारित [3] **ग्रामीण विश्वविद्यालय** [3] मॉडल के निर्माण के लिये नीति का आह्वान किया गया।	1. , 2. के 3. inverted comma का अनुचित प्रयोग। **Note:** Highlight करने के लिए Bold एवं single inverted comma में से किसी एक का प्रयोग किया जाना चाहिए।

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
पूर्ववर्ती शिक्षा नीति में परिवर्तन की आवश्यकता क्यों?
• बदलते वैश्विक परिदृश्य में [1] ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये मौजूदा शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता थी।
• शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिये [2] नई शिक्षा नीति की आवश्यकता थी।
• भारतीय शिक्षण व्यवस्था की वैश्विक स्तर पर पहुँच सुनिश्चित करने के लिये [3] शिक्षा के वैश्विक मानकों को अपनाने के लिये शिक्षा नीति में परिवर्तन की आवश्यकता थी।
नई शिक्षा नीति से संबंधित चुनौतियाँ
• राज्यों का सहयोगः शिक्षा एक समवर्ती विषय होने के कारण अधिकांश राज्यों के अपने स्कूल बोर्ड हैं [4] इसलिये इस फैसले के वास्तविक कार्यान्वयन हेतु राज्य सरकारों को सामने आना होगा। साथ ही शीर्ष नियंत्रण संगठन के तौर पर एक राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक परिषद को लाने संबंधी विचार का राज्यों द्वारा विरोध हो सकता है।
• महँगी शिक्षाः [5] नई शिक्षा नीति में विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया गया है। विभिन्न शिक्षाविदों का मानना है कि विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश से भारतीय शिक्षण व्यवस्था के महँगी होने की आशंका है। इसके फलस्वरूप निम्न वर्ग के छात्रों के लिये उच्च शिक्षा प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
</td><td>
1. अनुचित/अधिक खाली स्थान का प्रयोग
2. नयी
3. तथा
4. ,
5. नयी
</td></tr>
<tr><td>
• शिक्षा का संस्कृतिकरणः दक्षिण भारतीय राज्यों का यह आरोप है कि 'त्रि-भाषा' सूत्र से सरकार शिक्षा का संस्कृतिकरण करने का प्रयास कर रही है।
• फंडिंग संबंधी जाँच का अपर्याप्त होनाः कुछ राज्यों में अभी भी शुल्क संबंधी विनियमन मौजूद [1] है लेकिन ये नियामक प्रक्रियाएँ असीमित दान के रूप में मुनाफाखोरी पर अंकुश लगाने में असमर्थ हैं।
• वित्तपोषणः वित्तपोषण का सुनिश्चित होना इस बात पर निर्भर करेगा कि शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय के रूप में जीडीपी के प्रस्तावित 6%खर्च करने की इच्छाशक्ति कितनी सशक्त है।
• मानव संसाधन का अभावः वर्तमान में प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में कुशल शिक्षकों का अभाव है, ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के तहत प्रारंभिक शिक्षा हेतु की [2] गई व्यवस्था के क्रियान्वयन में व्यावहारिक समस्याएँ भी हैं।
समस्या कथन-
[3] "प्राथमिक स्तर पर अपव्यय- अवरोधन की समस्या का अध्ययन करना"
समस्या कथन का परिभाषीकरण-
समस्या का अन्तिम रूप [4] चयन हो जाने के पश्चात् उसका कथन किया जाता है। [5] तथा कथन के [6] पश्चात समस्या का [7] राह राई से [8] विशलेषण अर्थात परिभाषीकरण एवं वर्णन किया जाता है। समस्या का विश्लेषण एवं
</td><td>
1. हैं
2. गयी
3. बाँदा जनपद में प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन
नोट- समस्या कथन कभी भी वाक्य के रूप में नहीं लिखा जाता है।
4. से
5. निरर्थक शब्द
6. पश्चात
7. गहराई
8. विश्लेषण
</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
परिभाषीकरण शोध को[1] दिशाओं को स्पष्ट करता है।[2] तथा इस बात की ओर संकेत करता है कि उस[3] अनुसंन्धान म किस प्रकार के चर सन्निहित है,[4] [3]उनका मापन किस प्रकार किया जायेगा।[5] तथा उनुसन्धान[6] की प्रक्रिया क्या होगी।[5] इस प्रकार अनुसन्धान कार्य का सम्पूर्ण मानचित्र स्पष्ट एवं निश्चित हो जाता है। "[7]भिटनी के अनुसार-[3]समस्या को एक परिधि के भीतर सीमित करना उसे उन मिलते-जुलते।[8]प्रश्नों स भिन्न एवं उसे अलग करना जो सम्बन्धित परिस्थितियों में पाये जाते है"[9] साधारण भाषा में समस्या के परिभाषीकरण से तात्पर्य उसके विशिष्टीकरण एवं स्पष्टीकरण से ही होता है। उसका[10] आधार समस्या का विश्लेषण एवं स्पष्ट वर्णन होता है। उसके[11] अन्तर्गत निम्न कार्य आते ह-[12] • समस्यागत अनुसन्धान कार्य के विस्तार को सीमित करना। • समस्या सम्बन्धी विभिन्न अंगो[13] का स्पष्टीकरण एवं वर्णन करना। • समस्या में प्रयुक्त शब्दों एवं संकल्पनाओं के अर्थो[14] को स्पष्ट करना तथा उन्हें परिभाषित करना। शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण निम्न[15] है-	1. की 2. निरर्थक चिह्न **नोट-** तथा से पहले कभी भी पूर्ण विराम नहीं लगाया जाता है। 3. " 4. हैं?" 5. ?" 6. "अनुसन्धान 7. ? " inverted comma का अनुचित प्रयोग। 8. हैं तथा 9. । 10. जिसका 11. इसके 12. हैं 13. अंगों 14. अर्थों 15. इस प्रकार **नोट-** इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषा का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है, जोकि किया जाना चाहिए।
प्राथमिक शिक्षा- प्राथमिक शिक्षा ज्ञान के द्वारा[1] कुंजी होती है। प्राथमिक[2] शिक्षा बालकों को प्रारम्भिक स्तर पर दी जाती है।[3] इसलिए इसे प्रारम्भिक शिक्षा कहते है।[4] सामान्यतया यह शिक्षा 6 से 14 वर्ष तक की आयु के बालकों[5] को प्रदान की जाती है। **अपव्यय-** सन् 1929 म हटांग[6] कमेटी ने अपव्यय की परिभाषा प्रस्तुत की थी उनके अनुसार "बच्चों का[7] प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पूर्व ही किसी भी कक्षा से स्कूल छोड़ना अपव्यय है"[8] प्राथमिक शिक्षा के स्तर के बालकों की शिक्षा हेतु जब अभिभावकों, प्राथमिक शिक्षा को संचालित करने वाली सहायक संस्थाओं और राज्य के द्वारा खर्च किये गये धन का सदुपयोग नहीं हो पाता है।[9] तथा बालक किसी कारणवश प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने[10] वाली सहायक संस्थाओं से [11]शिक्षा पूर्ण करने वाली सहायक संस्थाओं से[11] शिक्षा छोड[12] देते है।[13] तो उसे प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में [14]अपव्यय[14] की समस्या[15] के नाम से सम्बोधित किया जाता है। **अवरोधन-** जब एक बालक एक[16] कक्षा में ही[17] निरन्तर अनुर्तीण[18] होता रहता है तो इस समस्या को 'अवरोधन' की समस्या कहते है।[19] प्राथमिक शिक्षा में अवरोधन की समस्या भी बड़ी जटिल है। कोठारी आयोग ने इस सम्बन्ध में नौ राज्यों का सर्वेक्षण किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि अवरोधन की समस्या प्राथमिक स्तर पर सबसे अधिक होती है सर्वेक्षण से यह तथ्य भी सामने आया	1. की 2. यह 3. ; 4. हैं। 5. बालक एवं बालिकाओं 6. हर्टाग 7. की 8. । 9. निरर्थक चिह्न **नोट -** पूर्ण विराम के बाद कभी भी 'तथा' से अगला वाक्य प्रारम्भ नहीं किया जाता है। 10. कराने 11. निरर्थक वाक्य

	12. छोड़ 13. हैं, 14. 'अपव्यय' 15. निरर्थक शब्द 16. ही 17. निरर्थक शब्द 18. अनुत्तीर्ण 19. हैं 20. **नोट-** इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषा का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है, जोकि किया जाना चाहिए।

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 है कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में अवरोधन की समस्या बहुत अधिक होती है। प्राथमिक स्तर पर अवरोधन होने पर सार्वभौमिक शिक्षा के प्रसार में रूकावट आती है। हर्टाग सामिति के अनुसार- अवरोधन या स्थिरता का अर्थ बालक का एक कक्षा में वर्ष अधिक रूक जाना है। **समस्या-** अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या- अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या प्रायः निर्धन तथा अविकसित समाज में अधिक होती है। भारत में तो यह समस्या विकराल रूप में है। अपव्यय अर्थात् किसी छात्र द्वारा पाठ्यक्रम की अवधि पूरी किये बिना बीच में ही पढ़ाई को अधूरी छोड़ देना यहां की निर्धन एवं अशिक्षित जनता के लिए एक सामान्य बात है। इसी प्रकार अवरोधन अर्थात् एक ही कक्षा में एक से अधिक वष तक अध्ययनरत् रहना भी यहाँ एक साधारण घटना मानी जाती है। अपव्यय व अवरोधन दोनो ही समाज के विकास में बाधा पहुँचाते है। इनमें से अपव्यय का कारण प्रायः लोगों की आर्थिक स्थिति का ठीक न होना तथा कमाई के लिए बालकों को कार्य में लगा देना है। कभी-कभी अज्ञानता के कारण भी माता-पिता बच्चों की पढ़ाई बीच में ही रोक देते है। किन्तु अवरोधन का कारण प्रमुख रूप से विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था का समुचित स्तर न होना तथा घर का वातावरण बालकों की शिक्षा में सहायक न होना आदि है। हर्टाग समिति ने 1929 ई में अपव्यय एवं अवरोधन के लिए प्रमुख रूप से निर्धनता, अशिक्षा, अनियमित विद्यालय व्यवस्था, दोष पूर्ण पाठ्यक्रम व 	1. रुकावट 2. " 3. एक 4. से 5. रुक 6. दोनों 7. हैं 8. हैं, 9. हैं 10. ई. 11. दोषपूर्ण **नोट-** इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषा का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है, जो आवश्यक रूप से किया जाना चाहिए। **नोट-** पृष्ठ में खाली स्थान नहीं छोड़ना चाहिए।

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


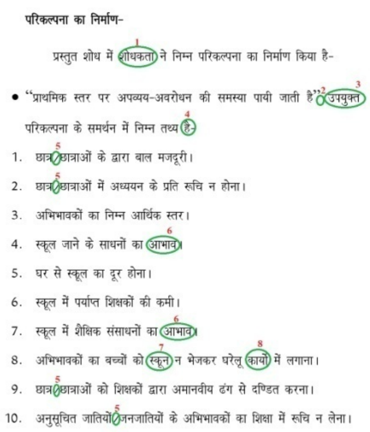
अध्ययन के उद्देश्य-

प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना-

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है- पूर्व चिन्तन। यह अनुसन्धान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण स्तम्भ है परिकल्पना का तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषीकरण के पश्चात् उसमें कारणों तथा कार्य-कारण के सम्बन्ण में पूर्व -चिन्तन कर लिया गया है, अर्थात इस समस्या का यह कारण हो सकता है। यह निश्चय करने के पश्चात् उसका परीक्षण प्रारम्भ हो जाता है। अनुसंधान कार्य इस परिकल्पना के निर्माण और उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है। और न कोई वैज्ञानिक विधि से अनुसन्धान ही सम्भव है।

गुड तथा हैट के अनुसार- "परिकल्पना इस बात का वर्णन करती है कि हम क्या देखना चाहते है। परिकल्पना भविष्य की ओर देखती है। यह एक तर्क पूर्ण वाक्य है। जिसकी वैधता की परीक्षा की जा सकती है। यह सही भी सिद्ध हो सकती है, और गलत भी।"

वहीं करलिगंर महोदय परिकल्पना को परिभाषित करते हुए लिखते है कि- **"परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्धों का आनुमानिक कथन है।"** अर्थात् जब अनुसन्धानकर्ता के समक्ष कोई समस्या आती है तो उसका विश्लेषण
</td><td>
1. ।
2. सम्बन्ध
3. William J. Goode and Paul K. Hatt
4. हैं।
5. करलिंगर (F. N. Kerlinger)
6. हैं
7. अपूर्ण वाक्य
नोट- इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषा का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है, जोकि किया जाना चाहिए।
नोट- विदेशी नामों को कोष्ठक में इंग्लिश में लिखा जाना चाहिए।
</td></tr>
<tr><td>


परिकल्पना का निर्माण-

प्रस्तुत शोध में शोधकता ने निम्न परिकल्पना का निर्माण किया है-

• "प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या पायी जाती है" उपयुक्त परिकल्पना के समर्थन में निम्न तथ्य है-

1. छात्र छात्राओं के द्वारा बाल मजदूरी।

2. छात्र छात्राओं में अध्ययन के प्रति रूचि न होना।

3. अभिभावकों का निम्न आर्थिक स्तर।

4. स्कूल जाने के साधनों का आभाव।

5. घर से स्कूल का दूर होना।

6. स्कूल में पर्याप्त शिक्षकों की कमी।

7. स्कूल में शैक्षिक संसाधनों का आभाव।

8. अभिभावकों का बच्चों को स्कून न भेजकर घरेलू कायों में लगाना।

9. छात्र छात्राओं को शिक्षकों द्वारा अमानवीय ढंग से दण्डित करना।

10. अनुसूचित जातियों जनजातियों के अभिभावकों का शिक्षा में रूचि न लेना।
</td><td>
1. शोधकर्त्री
2. ।
3. इस
4. हैं
5. –
6. अभाव
7. स्कूल
8. कार्यों
</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
अध्ययन का परिसीमन- प्रत्येक समस्या का एक विशाल [1]स्वरू होता है जो अपने में न केवल अंचल अपितु प्रदेश,[2] देश[3]विदेश को समेट लेता है। प्रत्येक अनुसन्धान, समस्या की प्रकृति तथा क्षेत्र को ध्यान में रखकर किया जाता है[4] किन्तु समस्या को व्यवहार रूप में [5]अध्ययन करनें के लिए परिसीमन करना आवश्यक होता है। **जॉन डब्लू0 बेस्ट[6]के अनुसार** "किसी शोध की सीमाएं वे दशाएं [7]है जिन पर शोधकर्ता नियन्त्रण रखता है, क्योंकि किसी विशेष स्थान के संदर्भ में निष्कर्ष निकाले जाते [8]है तथा ये निष्कर्ष इसी तरह की अन्य परिस्थितियों में [9]लाग किये जा सकते [10]है।" समयाभाव एवं साधन सीमित होने के कारण समस्या का क्षेत्र सीमित किया गया है। अध्ययन को निम्नलिखित परिसीमा में रखा गया है- • प्रस्तुत अध्ययन समयाभाव के कारण लघु न्यादर्श पर किया गया है। • प्रस्तुत अध्ययन[11]बाँदा जनपद के अन्तर्गत आने वाले प्राथमिक स्कूलों को ही लिया गया है। • प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में अपव्यय[12]अवरोधन की समस्या तक ही सीमित है। • प्रस्तुत लधुशोध में [13]शोधकर्ता ने समय का [14]आभाव होने क कारण[15]निम्न प्राथमिक स्कूलों को ही सम्मिलित किया है- - प्राथमिक विद्यालय, चिल्ला भाग-2	1. स्वरूप 2. तथा 3. – 4. , 5. अध्ययन करने 6. John W. Best. 7. हैं 8. हैं 9. लागू 10. हैं 11. में 12. – 13. शोधकर्त्री 14. अभाव 15. बाँदा जनपद के **नोट-** 1. इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषा का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है, जोकि किया जाना चाहिए था। 2. विदेशी नामों को कोष्ठक में इंग्लिश में लिखा जाना चाहिए।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score rule (Points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
2	**Review of Literature**	**Max Score=9**		
2.1.	Does the review identify gaps?	No		0
2.2.	Does the review identify overlaps?	No		0
2.3.	Does the review identify contradiction?	No		0
2.4.	Is the coverage of the review adequate?	No		0
2.5.	Is the review up-to-date?	No		0
2.6	What is the level of the review?	Finding Oriented		2
	Sub Total	**Actual Max=**		2

Comments:

शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोध साहित्य का सर्वेक्षण सन्दिग्ध प्रतीत होता है, क्योंकि इसमें किसी भी शोध कार्य का न तो फुट नोट में और न ही सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख किया गया है। शैक्षिक अनुसन्धान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन में Survey of Research in Education/शोध गंगा वेबसाइट को आवश्यक रूप से देखा जाना चाहिए, किन्तु शोधकर्त्री द्वारा ऐसा नहीं किया गया है। उल्लेखित सम्बन्धित साहित्य का सत्यापन करना सम्भव नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि लघु-शोध में उल्लेखित सम्बन्धित साहित्य कहीं से भी की गयी नकल अथवा cut & paste मात्र है, जिसका कोई औचित्य नहीं है। किसी भी शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण प्राथमिक स्रोतों से किया जाना चाहिए; ताकि शोध-कार्य में अशुद्धियों से बचा जा सके तथा उसका उल्लेख आवश्यक रूप से सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में भी किया जाना चाहिए। शोधकर्त्री द्वारा किये गये सम्बन्धित साहित्य में अनगिनत त्रुटियों का कारण यह भी हो सकता है कि वह द्वितीयक स्रोतों से अथवा अप्रमाणिक स्रोतों से लिए गये हों। अतः शोध-कार्य में वर्णित सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा के आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते हैं। अतः सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण निरर्थक है।

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	**अशुद्ध शब्दों का सही रूप**
द्वितीय अध्याय **सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण -** सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसन्धान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध-प्रबंधी[1] एवं अभिलेखों आदि स है।[2] जिनके अध्ययन से अनुसन्धान कर्ता[3] को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूप रेखा[4] तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसन्धानकर्ता का कार्य अन्धेरे में तीर चलाने के समान है। इसके अभाव में[5] उचित दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता[6] जब तक उसे ज्ञात ना हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है,[7] किस विधि से कार्य किया गया है[8] तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है[9] तब तक वह ना[10] तो समस्या का निर्धारण कर सकता है, और न ही उसकी रूपरेखा तयार कर कार्य को सम्पन्न ही[11] कर सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए -[12]	1. प्रबन्धों 2. निरर्थक चिह्न 3. अनुसन्धानकर्ता 4. रूपरेखा 5. , 6. , 7. ? 8. ? 9. हैं 10. न 11. निरर्थक शब्द 12. निरर्थक वाक्य

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
सम्बन्धित साहित्य की आवश्यकता एवं महत्व-

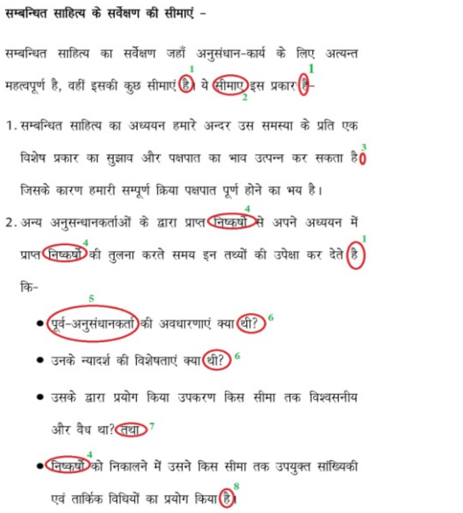
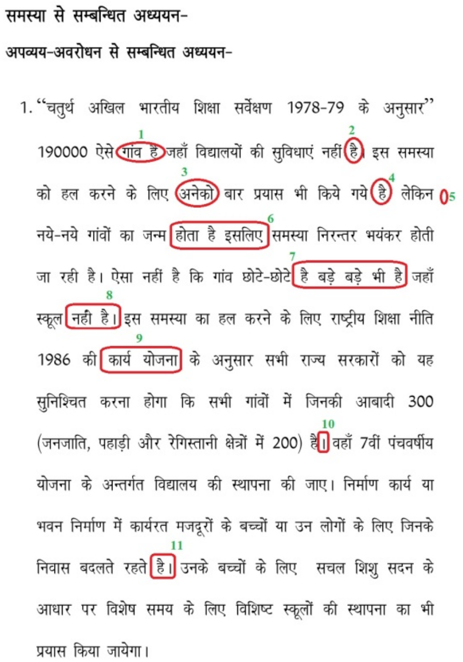
[1] वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसन्धानकर्ता का कार्य अंधे तीर के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है।

जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए [2] गड, बार तथा स्केट्स [3] कहते [4] है -[5] एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है [6] कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के [7] जिज्ञासु छात्र [8] अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता [9] के लिए भी उस [10] क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है। [11]
</td><td>
1. पिछले पृष्ठ में इसे ज्यों का त्यों दिया गया है, अनुच्छेद की पुनरावृत्ति नहीं की जानी चाहिए।
2. गुड
3. (Carter V. Good, A. S. Barr and Douglas E. Scates)
4. हैं
5. "
6. ,
7. प्रति
8. एवं
9. को
10. क्षेत्र
11. "
</td></tr>
<tr><td>
सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य-

गुड, बार तथा स्केट्स [1] ने साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य की [2] चचा करते हुए लिखा है कि यह निम्नलिखित तथ्यों को स्पष्ट करता है-
1. क्या उपलब्ध प्रमाण समस्या का समुचित समाधान प्रस्तुत करते [3] है?
2. यह सर्वेक्षण उन सिद्धान्तों, व्याख्याओं तथा परिकल्पनाओं को विचार प्रदान करता है जो अपने अध्ययन की समस्या के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण होते [4] है।
3. यह समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव देता है।
4. [5] तुलनात्मक [6] आंकड़ा को प्राप्त करने व उनके विश्लेषण में सहायक होता है।
5. सम्बन्धित साहित्य का [7] गम्भीर अध्ययन अनुसन्धानकर्ता के [8] ज्ञान कोष की वृद्धि करता है।
</td><td>
1. (Carter V. Good, A. S. Barr and Douglas E. Scates)
2. चर्चा
3. हैं?
4. हैं
5. यह
6. आंकड़ों
7. गहन
8. ज्ञानकोष में

नोट- विदेशी विद्वान या शिक्षाविद् का नाम हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में लिखा जाना चाहिए।
</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के कार्य- सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य है[1]- 1. यह अनुसन्धान के लिए सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करता है तथा विभिन्न सिद्धान्तों एवं निहित धारणाओं को समझने में सहायता करता है। 2. अनुसंधान के लिए किए गऐ[2] क्षेत्र में कितना और किस प्रकार का कार्य हो चुका है, इसकी जानकारी देता है। 3. लिए[3] गये अनुसन्धान के लिए किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा? कौन से उपकरण ठीक होंगे[4] किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा? इसकी जानकारी देता है। 4. लिए[3] गये अनुसंधानों की सफलता तथा उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में पूर्वानुमान होता है। 5. समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएं, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण म[5] सहायता करता है। 6. प्राप्त निष्कषो[6] के विश्लेषण के लिए सूझ पैदा करता है तथा समर्थन के लिए आधार प्रस्तुत कर अनुसंधानकर्ता में आत्म विश्वास[7] विकसित करता है।	1. हैं 2. गये 3. लिये 4. ? 5. में 6. निष्कर्षों 7. आत्मविश्वास
सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ- सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से अनुसंधानकर्ता को निम्नलिखित लाभ है[1]- 1. यह अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचता[2] है। 2. शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में अनुसंधानकर्ता के ज्ञान[3] उसकी स्पष्टता तथा कुशलता को स्पष्ट करता है। 3. सभी प्रकार के विज्ञानों तथा शास्त्रों में अनुसंधान कार्य का आधार होता है। इसके अभाव में एक इंच भी आगे नहों बढ़ सकते। 4. अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कायो[4] की सूचना देता है। 5. पहले किये गये कार्यो[4] के आंकड़े वर्तमान अध्ययन में सहायक होते है[5]। 6. यह समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है। 7. अनुसंधानकर्ता के समय की बचत करता है। 8. इससे अध्ययन के[6] रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है। 9. अनुसंधानकर्ता को त्रुटियों से बचाता एवं सावधान रखता है। 10. अध्ययन की विधि में सुधार कर श्रम की बचत करता है तथा अनुसंधानकर्ता में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है।	1. हैं 2. बचाता 3. , 4. कार्यों 5. हैं 6. की

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की सीमाएं -
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण जहाँ अनुसंधान-कार्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, वहीं इसकी कुछ सीमाएं है[1]। ये सीमाए[2] इस प्रकार है[1]-
1. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन हमारे अन्दर उस समस्या के प्रति एक विशेष प्रकार का सुझाव और पक्षपात का भाव उत्पन्न कर सकता है[3] जिसके कारण हमारी सम्पूर्ण क्रिया पक्षपात पूर्ण होने का भय है।
2. अन्य अनुसन्धानकर्ताओं के द्वारा प्राप्त निष्कर्षो[4] से अपने अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षो[4] की तुलना करते समय इन तथ्यों की उपेक्षा कर देते है[1] कि-
• पूर्व-अनुसंधानकर्ता[5] की अवधारणाएं क्या थी?[6]
• उनके न्यादर्श की विशेषताएं क्या थी?[6]
• उसके द्वारा प्रयोग किया उपकरण किस सीमा तक विश्वसनीय और वैध था? तथा[7]
• निष्कर्षो[4] को निकालने में उसने किस सीमा तक उपयुक्त सांख्यिकी एवं तार्किक विधियों का प्रयोग किया है[8]।</td><td>1. हैं
2. सीमाएँ
3. ,
4. निष्कर्षों
5. अनुसन्धानकर्ताओं
6. थीं?
7. निरर्थक शब्द
8. निरर्थक शब्द</td></tr>
<tr><td>
समस्या से सम्बन्धित अध्ययन-
अपव्यय-अवरोधन से सम्बन्धित अध्ययन-
1. "चतुर्थ अखिल भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण 1978-79 के अनुसार" 190000 ऐसे गांव है[1] जहाँ विद्यालयों की सुविधाएं नहीं है[2]। इस समस्या को हल करने के लिए अनेको[3] बार प्रयास भी किये गये है[4] लेकिन [5] नये-नये गांवों का जन्म होता है इसलिए[6] समस्या निरन्तर भयंकर होती जा रही है। ऐसा नहीं है कि गांव छोटे-छोटे है बड़े बड़े भी है[7] जहाँ स्कूल नहीं है।[8] इस समस्या का हल करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की कार्य योजना[9] के अनुसार सभी राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी गांवों में जिनकी आबादी 300 (जनजाति, पहाड़ी और रेगिस्तानी क्षेत्रों में 200) है।[10] वहाँ 7वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विद्यालय की स्थापना की जाए। निर्माण कार्य या भवन निर्माण में कार्यरत मजदूरों के बच्चों या उन लोगों के लिए जिनके निवास बदलते रहते है।[11] उनके बच्चों के लिए सचल शिशु सदन के आधार पर विशेष समय के लिए विशिष्ट स्कूलों की स्थापना का भी प्रयास किया जायेगा।</td><td>1. गाँव हैं,
2. हैं।
3. कई
4. हैं
5. दिन-प्रतिदिन
6. होने से यह
7. हैं कुछ गाँव बड़े-बड़े भी हैं,
8. नहीं हैं।
9. कार्य-योजना
10. ,
11. हैं।</td></tr>
</table>

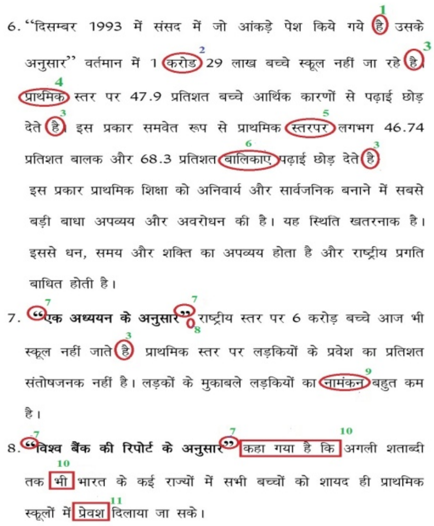
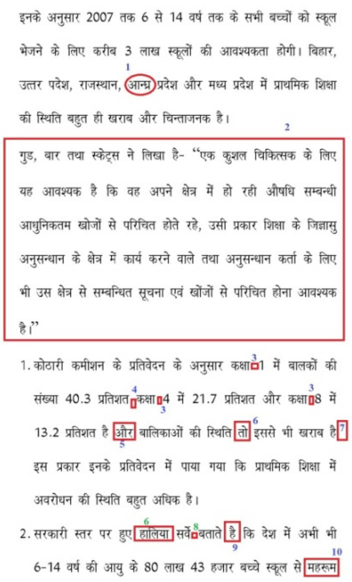
<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>2. “पाँचवे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वे 1986 में पाया गया” कि 94.5 प्रतिशत जनसंख्या के पास 1 किलोमीटर पैदल रास्ते की दूरी में प्राइमरी स्कूल और तीन किलोमीटर पैदल रास्ते की दूरी मे है।

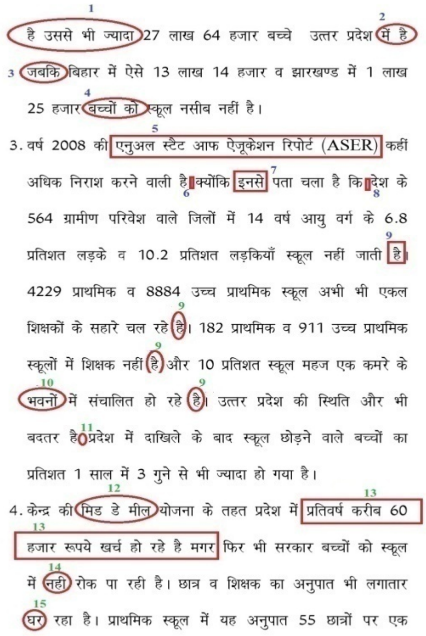
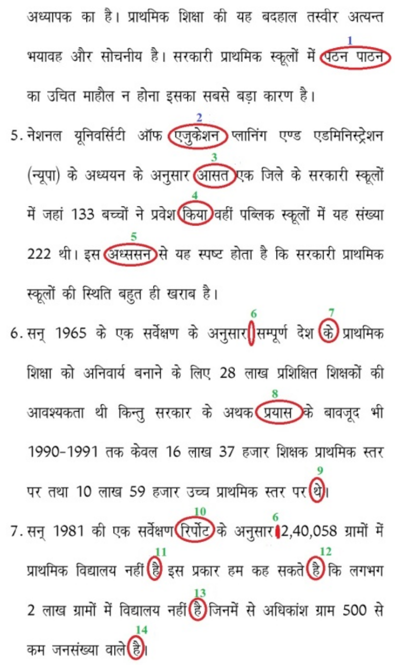
3. “अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के अनुसार” ग्रामीण जनसंख्या के लगभग 20 प्रतिशत भाग के लिए घर क नजदीक स्कूल नहीं थे और लगभग 63 प्रतिशत भाग के लिए मिडिल स्कूल नहीं थे। इस सर्वेक्षण के अनुसार 93 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या के लिए प्राथमिक स्कूल 1 किलोमीटर की दूरी पर है और 85 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या के लिए मिडिल स्कूल 3 किलोमीटर के भीतर की दूरी पर ह। यह दूरी प्राथमिक और मिडिल स्कूलों के लिए पैदल दूरी का सरकारी मानक है। यह दूरी का मानक सभी जगह लागू नहीं हो सकता है। कामकाजी महिलाओं पर यह मानक लागू नहीं होता है। 111.7 करोड़ की कुल जनसंख्या वाले लगभग 49 प्रतिशत ग्रामीण बस्तियों में बालकों के घर के पास स्कूल नहीं है।</td><td>1. पाँचवें
2. इनवर्टेड कॉमा का अनुचित प्रयोग
नोट- Highlight करने के लिए Bold एवं single inverted comma में से किसी एक का प्रयोग किया जाना चाहिए।
3. पर
4. –
5. स्थित
6. निरर्थक शब्द
7. स्थित हैं।
8. निरर्थक शब्द
9. निरर्थक शब्द
10. निरर्थक शब्द
11. निरर्थक शब्द
12. हैं
13. मिडिल स्कूल स्थित हैं</td></tr>
<tr><td>4. “संशोधित कार्य योजना(1992) केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुसार” 1980 में लगभग 32000 ऐसी बस्तियाँ थीं जिनमें जनसंख्या 300 या इससे अधिक थी लेकिन प्राथमिक स्कूल नहीं थे।

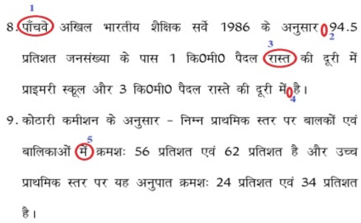
इसके निम्न कारण थे-
• सरकार का इस समस्या पर ध्यान न देना।
• इस समस्या को खत्म करने के लिए पर्याप्त धन व्यवस्था ना करना।
• ग्राम पंचायतों का इस समस्या को गंभीर न समझना।
• प्राथमिक शिक्षा के लिए जागरूकता की कमी।

भारत सरकार द्वारा अगस्त 1985 में प्रकाशित शिक्षा की चुनौती नामक दस्तावेज में पाया गया कि-
सन् 1968 में 100 में से कक्षा 5 तक केवल 33 बच्चे ही पहुँचते है।

5. “दिसम्बर 1988 में संसद में दिये गये आंकड़ों में पाया गया कि” सन् 1983-84 में 100 में से 50 बच्चे कक्षा 5 पास कर लेते थे और कक्षा 5 से 8 तक 27 बच्चे बीच में ही स्कूल छोड़ देते है अर्थात् 100 में से केवल 23 छात्र ही कक्षा 8 की पढ़ाई पूरी कर पाते है।</td><td>1. इनवर्टेड कॉमा का अनुचित प्रयोग
2. ।
3. ,
4. वहाँ
5. न
6. 'शिक्षा की चुनौती'
7. हैं।
8. इनवर्टेड कॉमा का अनुचित प्रयोग
9. थे
नोट- Highlight करने के लिए Bold एवं single inverted comma में से किसी एक का प्रयोग किया जाना चाहिए।</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>

6. "दिसम्बर 1993 में संसद में जो आंकड़े पेश किये गये है उसके अनुसार" वर्तमान में 1 करोड 29 लाख बच्चे स्कूल नहीं जा रहे है। प्राथमिक स्तर पर 47.9 प्रतिशत बच्चे आर्थिक कारणों से पढ़ाई छोड़ देते है। इस प्रकार समवेत रूप से प्राथमिक स्तरपर लगभग 46.74 प्रतिशत बालक और 68.3 प्रतिशत बालिकाए पढ़ाई छोड़ देते है
इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य और सार्वजनिक बनाने में सबसे बड़ी बाधा अपव्यय और अवरोधन की है। यह स्थिति खतरनाक है। इससे धन, समय और शक्ति का अपव्यय होता है और राष्ट्रीय प्रगति बाधित होती है।
7. "एक अध्ययन के अनुसार" राष्ट्रीय स्तर पर 6 करोड़ बच्चे आज भी स्कूल नहीं जाते है प्राथमिक स्तर पर लड़कियों के प्रवेश का प्रतिशत संतोषजनक नहीं है। लड़कों के मुकाबले लड़कियों का नामंकन बहुत कम है।
8. "विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार" कहा गया है कि अगली शताब्दी तक भी भारत के कई राज्यों में सभी बच्चों को शायद ही प्राथमिक स्कूलों में प्रवेश दिलाया जा सके।
</td><td>
1. निरर्थक शब्द
2. करोड़
3. हैं।
4. प्राथमिक
5. स्तर पर
6. बालिकाएँ
7. निरर्थक चिह्न
8. -
9. नामांकन
10. निरर्थक शब्द
11. प्रवेश
</td></tr>
<tr><td>

इनके अनुसार 2007 तक 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को स्कूल भेजने के लिए करीब 3 लाख स्कूलों की आवश्यकता होगी। बिहार, उत्तर पदेश, राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति बहुत ही खराब और चिन्ताजनक है।
गुड, बार तथा स्केट्स ने लिखा है- "एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होते रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसन्धान कर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचना एवं खोंजों से परिचित होना आवश्यक है।"
1. कोठारी कमीशन के प्रतिवेदन के अनुसार कक्षा 1 में बालकों की संख्या 40.3 प्रतिशत कक्षा 4 में 21.7 प्रतिशत और कक्षा 8 में 13.2 प्रतिशत है और बालिकाओं की स्थिति तो इससे भी खराब है इस प्रकार इनके प्रतिवेदन में पाया गया कि प्राथमिक शिक्षा में अवरोधन की स्थिति बहुत अधिक है।
2. सरकारी स्तर पर हुए हालिया सर्वे बताते है कि देश में अभी भी 6-14 वर्ष की आयु के 80 लाख 43 हजार बच्चे स्कूल से महरूम
</td><td>
1. आन्ध्र
2. सम्बन्धित साहित्य की आवश्यकता एवं महत्व के अन्तर्गत इस परिभाषा का उल्लेख किया जा चुका है। अतः अनुच्छेद की पुनरावृत्ति नहीं की जानी चाहिए।
3. –
4. ,
5. वहीं
6. निरर्थक शब्द
7. ।
8. यह
9. हैं
10. दूर
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
है उससे भी ज्यादा 27 लाख 64 हजार बच्चे उत्तर प्रदेश में है जबकि बिहार में ऐसे 13 लाख 14 हजार व झारखण्ड में 1 लाख 25 हजार बच्चों को स्कूल नसीब नहीं है।
3. वर्ष 2008 की एनुअल स्टैट आफ ऐजूकेशन रिपोर्ट (ASER) कहीं अधिक निराश करने वाली है क्योंकि इनसे पता चला है कि देश के 564 ग्रामीण परिवेश वाले जिलों में 14 वर्ष आयु वर्ग के 6.8 प्रतिशत लड़के व 10.2 प्रतिशत लड़कियाँ स्कूल नहीं जाती है। 4229 प्राथमिक व 8884 उच्च प्राथमिक स्कूल अभी भी एकल शिक्षकों के सहारे चल रहे है। 182 प्राथमिक व 911 उच्च प्राथमिक स्कूलों में शिक्षक नहीं है और 10 प्रतिशत स्कूल महज एक कमरे के भवनों में संचालित हो रहे है। उत्तर प्रदेश की स्थिति और भी बदतर है प्रदेश में दाखिले के बाद स्कूल छोड़ने वाले बच्चों का प्रतिशत 1 साल में 3 गुने से भी ज्यादा हो गया है।
4. केन्द्र की मिड डे मील योजना के तहत प्रदेश में प्रतिवर्ष करीब 60 हजार रूपये खर्च हो रहे है मगर फिर भी सरकार बच्चों को स्कूल में नही रोक पा रही है। छात्र व शिक्षक का अनुपात भी लगातार घर रहा है। प्राथमिक स्कूल में यह अनुपात 55 छात्रों पर एक</td>
<td>1. हैं। इसमें लगभग
2. के हैं,
3. निरर्थक शब्द
4. ऐसे बच्चे हैं, जिनको
5. ऐन्युअल स्टेट्स ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट
6. ,
7. इससे
8. -
9. हैं
10. भवन
11. ।
12. मिड-डे मील
13. दिये गये आँकड़े संदिग्ध हैं, क्योंकि यू.पी. में मिड-डे मील योजना के तहत पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या लाखों में है।
14. नहीं
15. घट</td></tr>
<tr><td>
अध्यापक का है। प्राथमिक शिक्षा की यह बदहाल तस्वीर अत्यन्त भयावह और सोचनीय है। सरकारी प्राथमिक स्कूलों में पठन पाठन का उचित माहौल न होना इसका सबसे बड़ा कारण है।
5. नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशन प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन (न्यूपा) के अध्ययन के अनुसार आसत एक जिले के सरकारी स्कूलों में जहां 133 बच्चों ने प्रवेश किया वहीं पब्लिक स्कूलों में यह संख्या 222 थी। इस अध्ससन से यह स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक स्कूलों की स्थिति बहुत ही खराब है।
6. सन् 1965 के एक सर्वेक्षण के अनुसार सम्पूर्ण देश के प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए 28 लाख प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता थी किन्तु सरकार के अथक प्रयास के बावजूद भी 1990-1991 तक केवल 16 लाख 37 हजार शिक्षक प्राथमिक स्तर पर तथा 10 लाख 59 हजार उच्च प्राथमिक स्तर पर थे।
7. सन् 1981 की एक सर्वेक्षण रिर्पोट के अनुसार 2,40,058 ग्रामों में प्राथमिक विद्यालय नहीं है इस प्रकार हम कह सकते है कि लगभग 2 लाख ग्रामों में विद्यालय नहीं है जिनमें से अधिकांश ग्राम 500 से कम जनसंख्या वाले है।</td>
<td>1. –
2. एजुकेशनल
3. – औसतन
4. लिया
5. अध्ययन
6. –
7. में
8. प्रयासों
9. नियुक्त थे।
10. रिपोर्ट
11. हैं।
12. हैं
13. हैं,
14. हैं।</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 8. पाँचवे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वे 1986 के अनुसार 94.5 प्रतिशत जनसंख्या के पास 1 कि0मी0 पैदल रास्त की दूरी में प्राइमरी स्कूल और 3 कि0मी0 पैदल रास्ते की दूरी में है। 9. कोठारी कमीशन के अनुसार - निम्न प्राथमिक स्तर पर बालकों एवं बालिकाओं में क्रमशः 56 प्रतिशत एवं 62 प्रतिशत है और उच्च्च प्राथमिक स्तर पर यह अनुपात क्रमशः 24 प्रतिशत एवं 34 प्रतिशत है।	1. पाँचवें 2. - 3. रास्ते 4. मिडिल स्कूल स्थित 5. का अनुपात

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
3	**Objectives and Hypotheses**	**Max Score=12**		
3.1	Are the objectives stated clearly?	Some		1
3.2	Are the objectives measurable?	Some		1
3.3	Are the objectives comprehensive?	Some		1
3.4	Are the hypotheses measurable?	All		2
3.5	Are the hypotheses stated clearly?	None		0
3.6	Are the hypotheses logical?	Some		1
	Sub-Total	**Actual Max=**		6

Comments:

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध के उद्देश्यों को ठीक तरह से वर्णित नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध में मात्र एक ही उद्देश्य लिखा गया है; जबकि कुछ अन्य उद्देश्य यथा- "प्राथमिक स्तर पर अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना" को सम्मिलित किया जाना चाहिए था।

शोधकर्त्री द्वारा घोषणात्मक परिकल्पना (Declarative Hypothesis) का प्रयोग किया गया है, किन्तु घोषणात्मक परिकल्पना क्या होती है? तथा इस लघु शोध में तक परिकल्पना के घोषणात्मक स्वरूप का ही प्रयोग क्यों किया गया है? इसका उल्लेख नहीं किया गया है।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	Score Rule (points)	Not Applicable (NA)	Score
4	**Research Design**	**Max Score=3**		
4.1	Does the choice of research design vis-à-vis the research objectives appropriate?	No		0
4.2	Are the reasons for the choice of the design given?	No		0
4.3	Has the methodology been explained in an understandable way to help replication of the work?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max=**		1

Comments:

शोध उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में शोध अभिकल्प उपयुक्त नहीं है। अनुसन्धानकर्त्री ने शोध अभिकल्प के चयन के कारण को स्पष्ट नहीं किया है कि उसने इस शोध अभिकल्प का चुनाव क्यों किया है? कार्य की पुनरावृत्ति में चयनित शोध अभिकल्प किस प्रकार सहायता करेगा? इसका वर्णन भी शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य में नहीं किया गया है।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	Score Rule (points)	Not Applicable (NA)	Score
5	**Variables**	**Max Score=3**		
5.1	Are the variables rightly identified?	Yes		1
5.2	Are the variables operationally defined?	No		0
5.3	Are the variables measurable?	Yes		1
	Sub-Total	**Actual Max=**		2

Comments:

प्रस्तुत शोध-कार्य में शोधकर्त्री द्वारा शोध के चरों की पहचान उपयुक्त प्रकार से की गयी हैं; किन्तु चरों को क्रियात्मक रूप से परिभाषित नहीं किया गया है। चरों के परिभाषीकरण में शोधकर्त्री ने प्राथमिक शिक्षा, अपव्यय तथा अवरोधन को परिभाषित किया है; किन्तु शोधकर्त्री ने बाँदा जनपद का कोई उल्लेख नहीं किया है। इसलिए हम कह सकते हैं कि चरों को क्रियात्मक रूप से परिभाषित नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध-कार्य के चर मापनीय हैं।

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
6	**Research Instruments**	**Max Score=5**		
6.1	Does the instrument selected measure the variables accurately?	No		0
6.2	Has the feasibility of the instrument been tested?	No		0
6.3	Is the language used in the research instruments comprehensible?	No		0
6.4	Are the instruments reliable?	No		0
6.5	Are the instruments valid?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max=**		0

Comments:

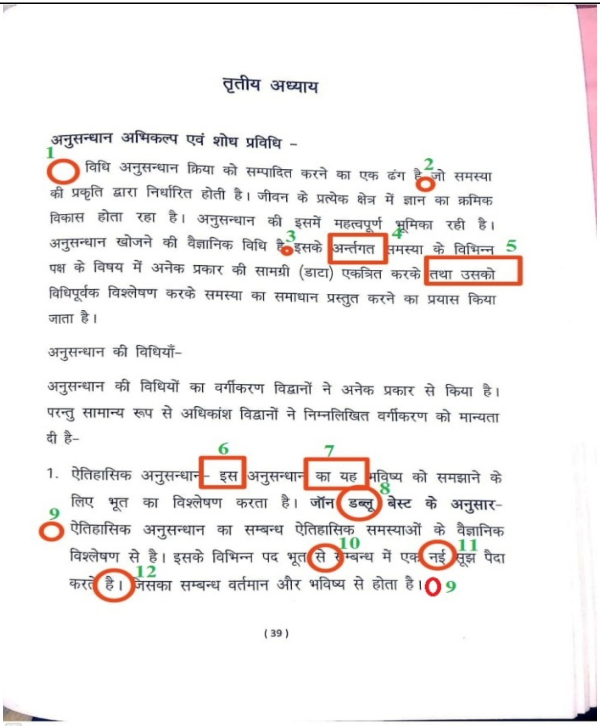
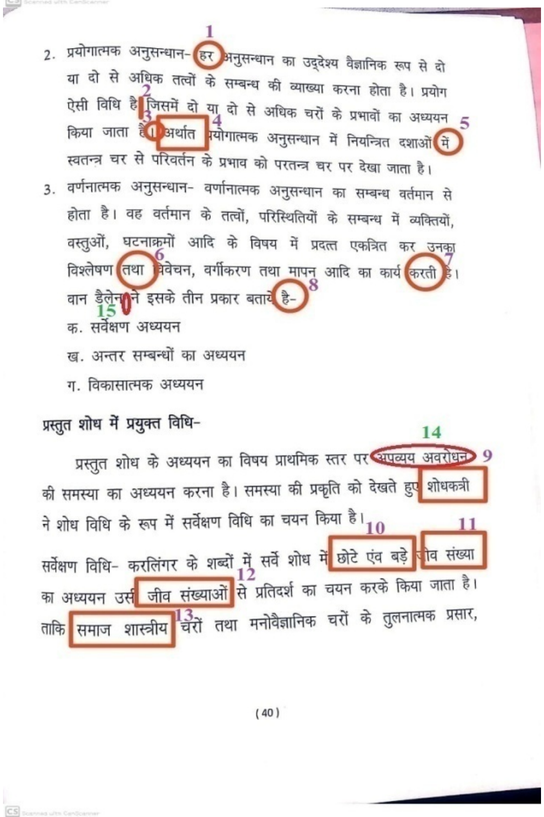
प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने 'स्वनिर्मित प्रश्नावली' का प्रयोग किया है, जो चरों का उपयुक्त प्रकार से मापन नहीं करती है। शोधकर्त्री ने इस प्रश्नावली की व्यावहारिकता परीक्षण के विषय में कोई उल्लेख नहीं किया है। शोधकर्त्री द्वारा प्रयोग में लाया गया उपकरण सम्यक् प्रकार से बोधगम्य नहीं है। शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त प्रश्नावली की विश्वसनीयता तथा वैधता के विषय में भी कुछ कहा नहीं जा सकता है।

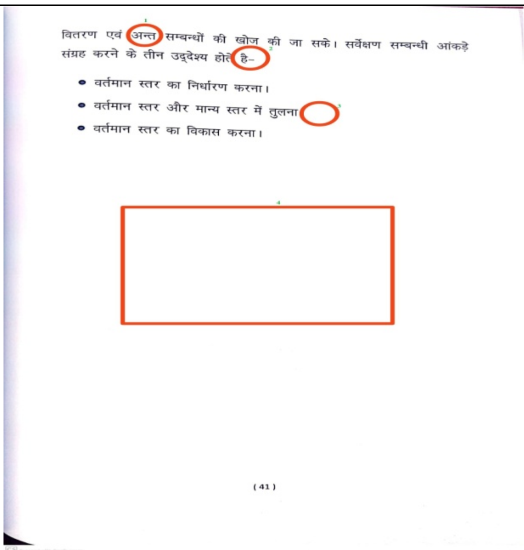
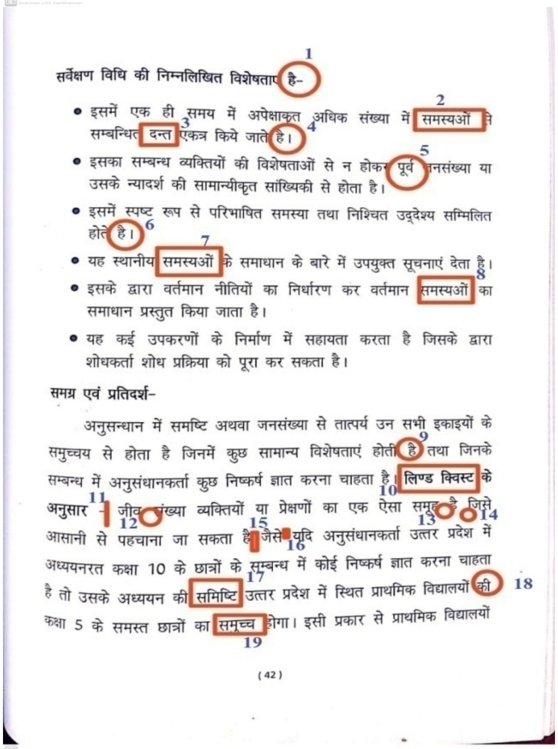
Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
7	**Sample**	**Max Score=3**		
7.1	Is the size of the sample appropriate?	No		0
7.2	Is the technique of choosing the sample appropriate?	No		0
7.3	Is the sample representative of the population?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max=**		0

Comments:

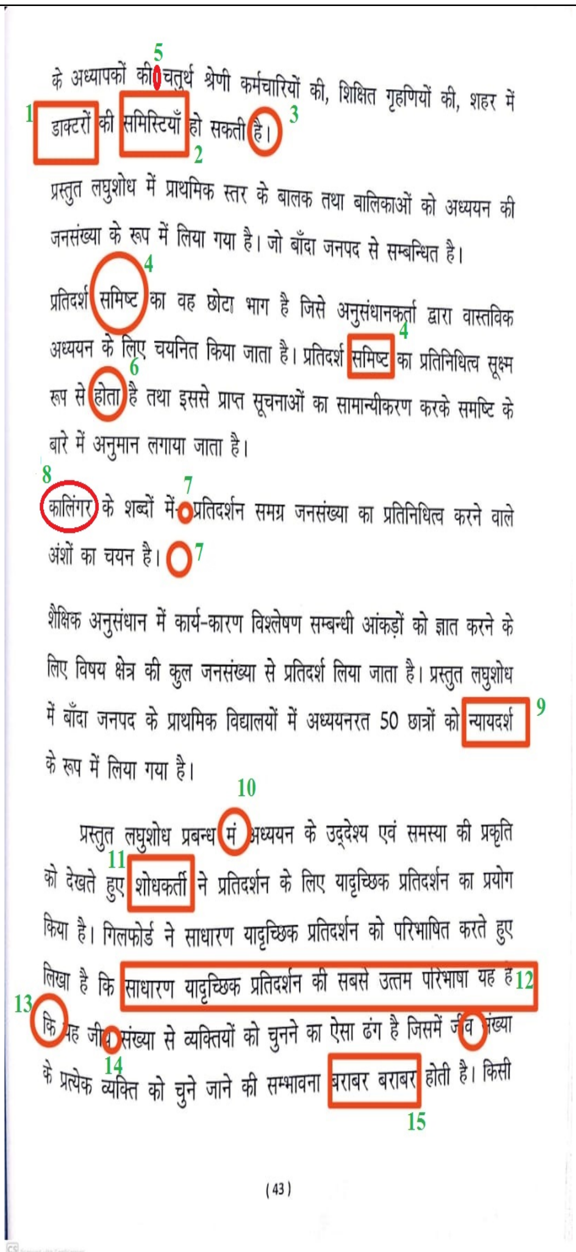
न्यादर्श का चुनाव करने में शोधकर्त्री ने बहुत-सी असावधानियाँ की हैं। शोधकर्त्री द्वारा चुना गया न्यादर्श एवं न्यादर्श चयन का तरीका उपयुक्त नहीं है। शोधकर्त्री द्वारा चुने गये न्यादर्श का न तो आकार उपयुक्त है और न ही न्यादर्श चयन की विधि। शोधकर्त्री द्वारा चुने गये न्यादर्श द्वारा जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व नहीं किया जा सकता।

शोध अभिकल्प, अध्ययन के चर, शोध उपकरण, तथा न्यादर्श में प्रयुक्त गलत शब्दों के सही रूप-

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>

तृतीय अध्याय
अनुसन्धान अभिकल्प एवं शोध प्रविधि –
विधि अनुसन्धान क्रिया को सम्पादित करने का एक ढंग है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान का क्रमिक विकास होता रहा है। अनुसन्धान की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अनुसन्धान खोजने की वैज्ञानिक विधि है इसके अर्न्तगत समस्या के विभिन्न पक्ष के विषय में अनेक प्रकार की सामग्री (डाटा) एकत्रित करके तथा उसको विधिपूर्वक विश्लेषण करके समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।
अनुसन्धान की विधियाँ–
अनुसन्धान की विधियों का वर्गीकरण विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है। परन्तु सामान्य रूप से अधिकांश विद्वानों ने निम्नलिखित वर्गीकरण को मान्यता दी है–
1. ऐतिहासिक अनुसन्धान- इस अनुसन्धान का यह भविष्य को समझाने के लिए भूत का विश्लेषण करता है। जॉन डब्लू बेस्ट के अनुसार- ऐतिहासिक अनुसन्धान का सम्बन्ध ऐतिहासिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण से है। इसके विभिन्न पद भूत से सम्बन्ध में एक नई सूझ पैदा करते है। जिसका सम्बन्ध वर्तमान और भविष्य से होता है।
(39)

2. प्रयोगात्मक अनुसन्धान- हर अनुसन्धान का उद्देश्य वैज्ञानिक रूप से दो या दो से अधिक तत्वों के सम्बन्ध की व्याख्या करना होता है। प्रयोग ऐसी विधि है जिसमें दो या दो से अधिक चरों के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। अर्थात प्रयोगात्मक अनुसन्धान में नियन्त्रित दशाओं में स्वतन्त्र चर से परिवर्तन के प्रभाव को परतन्त्र चर पर देखा जाता है।
3. वर्णनात्मक अनुसन्धान- वर्णानात्मक अनुसन्धान का सम्बन्ध वर्तमान से होता है। वह वर्तमान के तत्वों, परिस्थितियों के सम्बन्ध में व्यक्तियों, वस्तुओं, घटनाक्रमों आदि के विषय में प्रदत्त एकत्रित कर उनका विश्लेषण तथा विवेचन, वर्गीकरण तथा मापन आदि का कार्य करती है। वान डैलेन ने इसके तीन प्रकार बताये है-
क. सर्वेक्षण अध्ययन
ख. अन्तर सम्बन्धों का अध्ययन
ग. विकासात्मक अध्ययन
प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि-
प्रस्तुत शोध के अध्ययन का विषय प्राथमिक स्तर पर अपव्यय अवरोधन की समस्या का अध्ययन करना है। समस्या की प्रकृति को देखते हुए शोधकत्री ने शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।
सर्वेक्षण विधि- करलिंगर के शब्दों में सर्वे शोध में छोटे एंव बड़े जीव संख्या का अध्ययन उसे जीव संख्याओं से प्रतिदर्श का चयन करके किया जाता है। ताकि समाज शास्त्रीय चरों तथा मनोवैज्ञानिक चरों के तुलनात्मक प्रसार,
(40)
</td><td>
1. अनुसन्धान
2. ,
3. ,
4. अन्तर्गत
5. एवं उसका
6. यह
7. निरर्थक शब्द
8. डब्ल्यू
9. “ ”
10. के
11. नयी
12. हैं
नोट- इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषाओं का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है, जोकि किया जाना चाहिए था।
1. प्रत्येक
2. ,
3. निरर्थक चिह्न
4. अर्थात्
5. के अन्तर्गत
6. , (निरर्थक शब्द)
7. करता
8. हैं-
9. शोधकर्त्री
10. छोटी एवं बड़ी
11. -
12. -
13. समाजशास्त्रीय-
14. अपव्यय-अवरोधन
15. (Van Dalen)
नोट- विदेशी विद्वान या शिक्षाविद् का नाम हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में लिखा जाना चाहिए था।
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
वितरण एवं अन्त सम्बन्धों की खोज की जा सके। सर्वेक्षण सम्बन्धी आंकड़े संग्रह करने के तीन उद्देश्य होते है-
• वर्तमान स्तर का निर्धारण करना।
• वर्तमान स्तर और मान्य स्तर में तुलना
• वर्तमान स्तर का विकास करना।
(41)</td>
<td>1. अन्तर
2. हैं
3. करना।
4. पेज खाली स्थान नहीं छोड़ना चाहिए था; रनिंग में लिखना चाहिए।</td></tr>
<tr><td>
सर्वेक्षण विधि की निम्नलिखित विशेषताएं है-
• इसमें एक ही समय में अपेक्षाकृत अधिक संख्या में समस्यओं से सम्बन्धित दन्त एकत्र किये जाते है।
• इसका सम्बन्ध व्यक्तियों की विशेषताओं से न होकर पूर्व जनसंख्या या उसके न्यादर्श की सामान्यीकृत सांख्यिकी से होता है।
• इसमें स्पष्ट रूप से परिभाषित समस्या तथा निश्चित उद्देश्य सम्मिलित होते है।
• यह स्थानीय समस्यओं के समाधान के बारे में उपयुक्त सूचनाएं देता है।
• इसके द्वारा वर्तमान नीतियों का निर्धारण कर वर्तमान समस्यओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है।
• यह कई उपकरणों के निर्माण में सहायता करता है जिसके द्वारा शोधकर्ता शोध प्रक्रिया को पूरा कर सकता है।
समग्र एवं प्रतिदर्श-
अनुसन्धान में समष्टि अथवा जनसंख्या से तात्पर्य उन सभी इकाइयों के समुच्चय से होता है जिनमें कुछ सामान्य विशेषताएं होती है तथा जिनके सम्बन्ध में अनुसंधानकर्ता कुछ निष्कर्ष ज्ञात करना चाहता है। लिण्ड क्विस्ट के अनुसार जीव संख्या व्यक्तियों या प्रेक्षणों का एक ऐसा समूह है जिसे आसानी से पहचाना जा सकता है। जैसे यदि अनुसंधानकर्ता उत्तर प्रदेश में अध्ययनरत कक्षा 10 के छात्रों के सम्बन्ध में कोई निष्कर्ष ज्ञात करना चाहता है तो उसके अध्ययन की समिष्टि उत्तर प्रदेश में स्थित प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 5 के समस्त छात्रों का समुच्च होगा। इसी प्रकार से प्राथमिक विद्यालयों
(42)</td>
<td>1. हैं-
2. समस्याओं
3. प्रदत्त
4. हैं।
5. पूर्ण
6. हैं।
7. समस्याओं
8. समस्याओं
9. हैं
10. लिंडक्विस्ट (Lindquist)
नोट- विदेशी विद्वान या शिक्षाविद् का नाम हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में लिखा जाना चाहिए था।
11. "
12. -
13. होता
14. ,
15. ।"
16. –
17. समष्टि
18. के
19. समुच्चय</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



के अध्यापकों की चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की, शिक्षित गृहणियों की, शहर में डाक्टरों की समिस्टियाँ हो सकती है।

प्रस्तुत लघुशोध में प्राथमिक स्तर के बालक तथा बालिकाओं को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में लिया गया है। जो बाँदा जनपद से सम्बन्धित है।

प्रतिदर्श समिष्ट का वह छोटा भाग है जिसे अनुसंधानकर्ता द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है। प्रतिदर्श समिष्ट का प्रतिनिधित्व सूक्ष्म रूप से होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का सामान्यीकरण करके समष्टि के बारे में अनुमान लगाया जाता है।

कालिंगर के शब्दों में प्रतिदर्शन समग्र जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले अंशों का चयन है।

शैक्षिक अनुसंधान में कार्य-कारण विश्लेषण सम्बन्धी आंकड़ों को ज्ञात करने के लिए विषय क्षेत्र की कुल जनसंख्या से प्रतिदर्श लिया जाता है। प्रस्तुत लघुशोध में बाँदा जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 50 छात्रों को न्यायदर्श के रूप में लिया गया है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध मं अध्ययन के उद्देश्य एवं समस्या की प्रकृति को देखते हुए शोधकर्ता ने प्रतिदर्शन के लिए यादृच्छिक प्रतिदर्शन का प्रयोग किया है। गिलफोर्ड ने साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन को परिभाषित करते हुए लिखा है कि साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन की सबसे उत्तम परिभाषा यह है कि यह जीव संख्या से व्यक्तियों को चुनने का ऐसा ढंग है जिसमें जीव संख्या के प्रत्येक व्यक्ति को चुने जाने की सम्भावना बराबर बराबर होती है। किसी

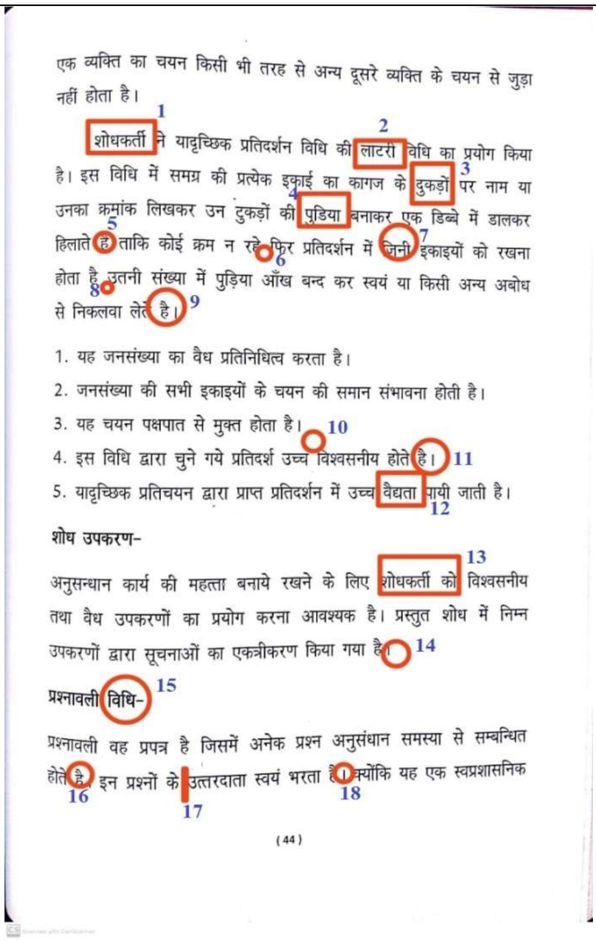
(43)

1. डॉक्टरों
2. समष्टियाँ
3. हैं।
4. समष्टि
5. ,
6. करता
7. " "
8. करलिंगर (F. N. Kerlinger)

नोट- विदेशी विद्वान या शिक्षाविद् का नाम हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में लिखा जाना चाहिए था।

9. न्यादर्श
10. में
11. शोधकर्त्री
12. – निरर्थक वाक्य
13. –
14. –
15. बराबर-बराबर

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



एक व्यक्ति का चयन किसी भी तरह से अन्य दूसरे व्यक्ति के चयन से जुड़ा नहीं होता है।

शोधकर्ती ने यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि की लाटरी विधि का प्रयोग किया है। इस विधि में समग्र की प्रत्येक इकाई का कागज के टुकड़ों पर नाम या उनका क्रमांक लिखकर उन टुकड़ों की पुडिया बनाकर एक डिब्बे में डालकर हिलाते है ताकि कोई क्रम न रहे फिर प्रतिदर्शन में जिनी इकाइयों को रखना होता है उतनी संख्या में पुड़िया आँख बन्द कर स्वयं या किसी अन्य अबोध से निकलवा लेते है।

1. यह जनसंख्या का वैध प्रतिनिधित्व करता है।
2. जनसंख्या की सभी इकाइयों के चयन की समान संभावना होती है।
3. यह चयन पक्षपात से मुक्त होता है।
4. इस विधि द्वारा चुने गये प्रतिदर्श उच्च विश्वसनीय होते है।
5. यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा प्राप्त प्रतिदर्शन में उच्च वैद्यता पायी जाती है।

शोध उपकरण-

अनुसन्धान कार्य की महत्ता बनाये रखने के लिए शोधकर्ती को विश्वसनीय तथा वैध उपकरणों का प्रयोग करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में निम्न उपकरणों द्वारा सूचनाओं का एकत्रीकरण किया गया है।

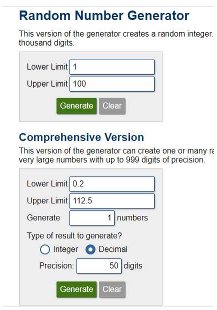
प्रश्नावली विधि-

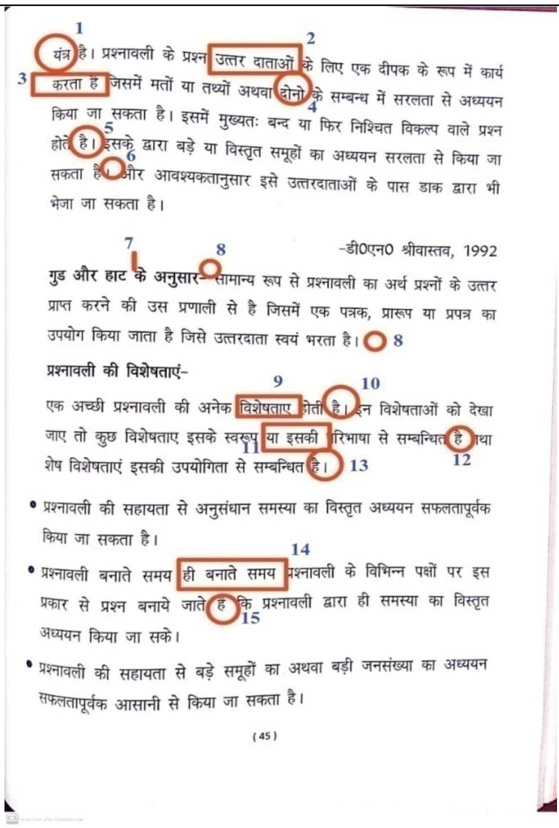
प्रश्नावली वह प्रपत्र है जिसमें अनेक प्रश्न अनुसंधान समस्या से सम्बन्धित होते है इन प्रश्नों के उत्तरदाता स्वयं भरता है। क्योंकि यह एक स्वप्रशासनिक

(44)

1. शोधकर्त्री
2. लॉटरी
3. टुकड़ों
4. पुड़िया
5. हैं
6. ।
7. जितनी
8. ,
9. हैं
10. तथा
11. हैं
12. वैधता
13. शोधकर्त्री द्वारा
14. –
15. निरर्थक शब्द
16. हैं।
17. उत्तर
18. ;

नोट- शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श चयन हेतु लॉटरी विधि का प्रयोग किया जाना दर्शाया गया है, जबकि परिशिष्ट में जनसंख्या की कोई सूची नहीं लगाई गयी है। लॉटरी विधि एक प्राचीन विधि है; जिसमें पर्चियां बनानी होती हैं, जबकि इसके स्थान पर वर्तमान में न्यादर्श के चयन हेतु online random number generator का प्रयोग किया जाना चाहिए।



<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


यंत्र है। प्रश्नावली के प्रश्न उत्तर दाताओं के लिए एक दीपक के रूप में कार्य करता है जिसमें मतों या तथ्यों अथवा दोनो के सम्बन्ध में सरलता से अध्ययन किया जा सकता है। इसमें मुख्यतः बन्द या फिर निश्चित विकल्प वाले प्रश्न होते है। इसके द्वारा बड़े या विस्तृत समूहों का अध्ययन सरलता से किया जा सकता है। और आवश्यकतानुसार इसे उत्तरदाताओं के पास डाक द्वारा भी भेजा जा सकता है।

-डी0एन0 श्रीवास्तव, 1992

गुड और हाट के अनुसार- सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है जिसे उत्तरदाता स्वयं भरता है।

प्रश्नावली की विशेषताएं-

एक अच्छी प्रश्नावली की अनेक विशेषताए होती है। इन विशेषताओं को देखा जाए तो कुछ विशेषताए इसके स्वरूप या इसकी परिभाषा से सम्बन्धित है तथा शेष विशेषताएं इसकी उपयोगिता से सम्बन्धित है।

- प्रश्नावली की सहायता से अनुसंधान समस्या का विस्तृत अध्ययन सफलतापूर्वक किया जा सकता है।
- प्रश्नावली बनाते समय ही बनाते समय प्रश्नावली के विभिन्न पक्षों पर इस प्रकार से प्रश्न बनाये जाते है कि प्रश्नावली द्वारा ही समस्या का विस्तृत अध्ययन किया जा सके।
- प्रश्नावली की सहायता से बड़े समूहों का अथवा बड़ी जनसंख्या का अध्ययन सफलतापूर्वक आसानी से किया जा सकता है।

(45)
</td><td>
1. उपकरण
2. उत्तरदाताओं
3. करते हैं,
4. दोनों
5. हैं;
6. निरर्थक चिह्न
7. William J. Goode and Paul K. Hatt.
8. " "
9. विशेषताएँ
10. हैं।
11. एवं
12. होती हैं
13. होती हैं
14. निरर्थक शब्द
15. हैं
नोट- इस पृष्ठ में प्रयुक्त परिभाषाओं का फुटनोट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेख नहीं किया गया है, जोकि किया जाना चाहिए था।
</td></tr>
</table>

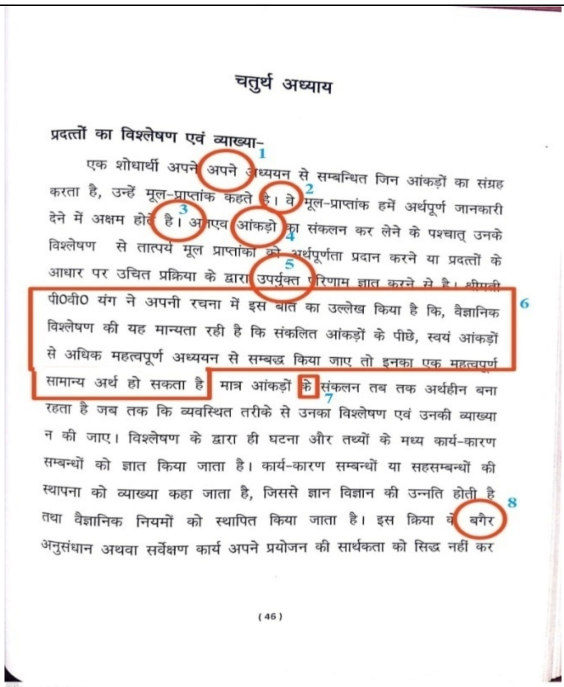
Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
8	**Data Collection and Analysis**	**Max Score =4**		
8.1	Has the researcher collected the primary data personally?	No		0
8.2	Are the secondary data sources authentic and reliable?	No		0
8.3	Are the statistical tests used appropriately?	No		0
8.4	Is the quantitative/qualitative data analysis effective?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		0

Comments:

प्रदत्तों के संकलन के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता है कि शोधकर्त्री ने प्रदत्तों का संकलन स्वयं किया है या नहीं; क्योंकि प्रदत्तों के संकलन का विवरण शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत लघु-शोध में स्पष्ट नहीं किया गया है। शोधकर्त्री द्वारा इस बात का भी उल्लेख नहीं किया गया है कि बाँदा जनपद में कुल कितने प्राथमिक विद्यालय हैं तथा चुने गये प्राथमिक विद्यालयों में कुल छात्रों की संख्या कितनी है? और किस कक्षा के विद्यार्थियों को प्रदत्तों के संकलन हेतु चयनित किया गया है? प्रदत्तों के संकलन की विश्वसनीयता हेतु शोधकर्त्री को प्रदत्तों के संकलन से सम्बन्धित चित्रों को प्रस्तुत लघु-शोध में प्रदर्शित किया जाना चाहिए था, जिससे कि यह स्पष्ट हो जाता कि शोधकर्त्री ने प्रदत्तों का संकलन स्वयं किया है। द्वितीयक समंकों के विषय में शोधकर्त्री ने कोई उल्लेख प्रस्तुत नहीं किया है।

शोधकर्त्री द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु पाई चार्ट का प्रयोग किया गया है, किंतु पाई चार्ट श्वेत श्याम है। इन्हें रंगीन तथा त्रिआयामी (three dimensional) बनाया जाना चाहिए। शोधकर्त्री द्वारा किये गए प्रदत्तों के परिमाणात्मक तथा गुणात्मक विश्लेषण प्रभावी नहीं हैं।

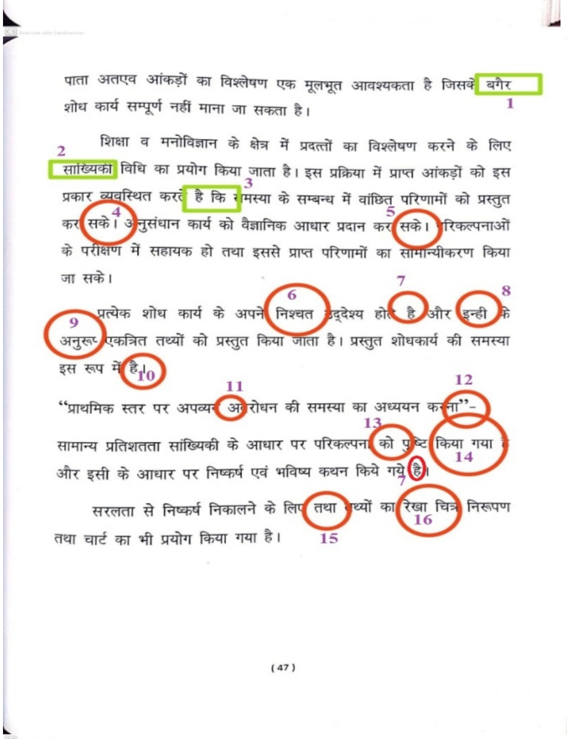
प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण में प्रयुक्त शब्दों के सही रूप -

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

एक शोधार्थी अपने अपने अध्ययन से सम्बन्धित जिन आंकड़ों का संग्रह करता है, उन्हें मूल-प्राप्तांक कहते है। वे मूल-प्राप्तांक हमें अर्थपूर्ण जानकारी देने में अक्षम होते है। अतएव आंकड़ो का संकलन कर लेने के पश्चात् उनके विश्लेषण से तात्पर्य मूल प्राप्तांकों को अर्थपूर्णता प्रदान करने या प्रदत्तों के आधार पर उचित प्रक्रिया के द्वारा उपर्युक्त परिणाम ज्ञात करने से है। श्रीमती पी0वी0 यंग ने अपनी रचना में इस बात का उल्लेख किया है कि, वैज्ञानिक विश्लेषण की यह मान्यता रही है कि संकलित आंकड़ों के पीछे, स्वयं आंकड़ों से अधिक महत्वपूर्ण अध्ययन से सम्बद्ध किया जाए तो इनका एक महत्वपूर्ण सामान्य अर्थ हो सकता है मात्र आंकड़ों के संकलन तब तक अर्थहीन बना रहता है जब तक कि व्यवस्थित तरीके से उनका विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या न की जाए। विश्लेषण के द्वारा ही घटना और तथ्यों के मध्य कार्य-कारण सम्बन्धों को ज्ञात किया जाता है। कार्य-कारण सम्बन्धों या सहसम्बन्धों की स्थापना को व्याख्या कहा जाता है, जिससे ज्ञान विज्ञान की उन्नति होती है तथा वैज्ञानिक नियमों को स्थापित किया जाता है। इस क्रिया के बगैर अनुसंधान अथवा सर्वेक्षण कार्य अपने प्रयोजन की सार्थकता को सिद्ध नहीं कर

(46)
</td><td>
1. निरर्थक शब्द
2. हैं। ये
3. हैं।
4. आँकड़ों
5. उपयुक्त
6. परिभाषा का अर्थ स्पष्ट नहीं है।
7. का
8. बिना
नोट- मानक शब्दावली का प्रयोग किया जाना चाहिए।
</td></tr>
<tr><td>


पाता अतएव आंकड़ों का विश्लेषण एक मूलभूत आवश्यकता है जिसके बगैर शोध कार्य सम्पूर्ण नहीं माना जा सकता है।

शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में प्राप्त आंकड़ों को इस प्रकार व्यवस्थित करते है कि समस्या के सम्बन्ध में वांछित परिणामों को प्रस्तुत कर सके। अनुसंधान कार्य को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर सके। परिकल्पनाओं के परीक्षण में सहायक हो तथा इससे प्राप्त परिणामों का सामान्यीकरण किया जा सके।

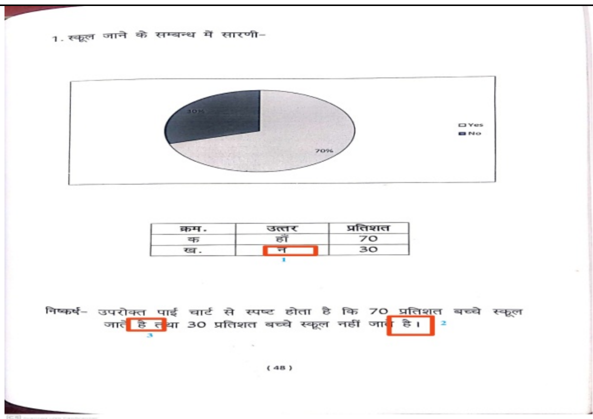
प्रत्येक शोध कार्य के अपने निश्चत उद्देश्य होते है और इन्ही के अनुरूप एकत्रित तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत शोधकार्य की समस्या इस रूप में है।

"प्राथमिक स्तर पर अपव्यय अवरोधन की समस्या का अध्ययन करना"-

सामान्य प्रतिशतता सांख्यिकी के आधार पर परिकल्पना को पुष्टि किया गया है और इसी के आधार पर निष्कर्ष एवं भविष्य कथन किये गये है।

सरलता से निष्कर्ष निकालने के लिए तथा तथ्यों का रेखा चित्र निरूपण तथा चार्ट का भी प्रयोग किया गया है।

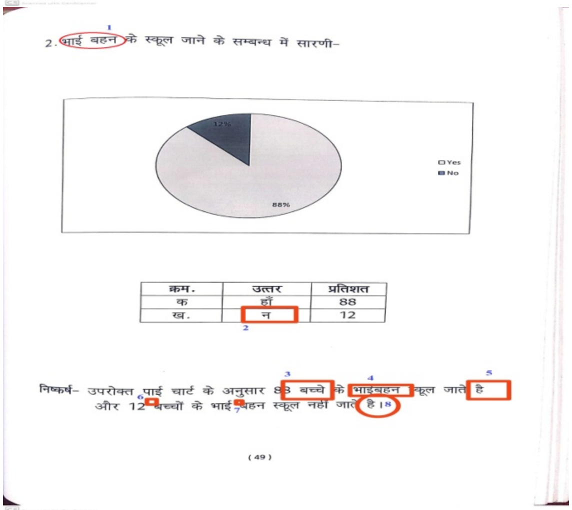
(47)
</td><td>
1. बिना
नोट- मानक शब्दावली का प्रयोग किया जाना चाहिए।
2. सांख्यिकी
3. हैं कि-
4. सकें,
5. सकें,
6. निश्चित
7. हैं
8. इन्हीं
9. अनुरूप
10. –
11. अपव्यय-अवरोधन
12. ।"
13. की
14. की गयी हैं
15. निरर्थक शब्द
16. रेखाचित्र
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


1. स्कूल जाने के सम्बन्ध में सारणी–

क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	हाँ	70
ख.	न	30

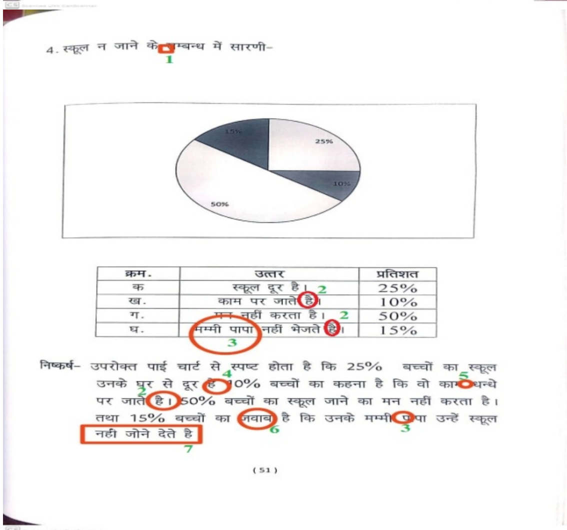
निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि 70 प्रतिशत बच्चे स्कूल जाते है तथा 30 प्रतिशत बच्चे स्कूल नहीं जाते है।

(48)
</td><td>
1. नहीं
2. हैं।
3. हैं
</td></tr>
<tr><td>


2. भाई बहन के स्कूल जाने के सम्बन्ध में सारणी–

क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	हाँ	88
ख.	न	12

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 88 बच्चे के भाईबहन स्कूल जाते है और 12 बच्चों के भाई बहन स्कूल नहीं जाते है।

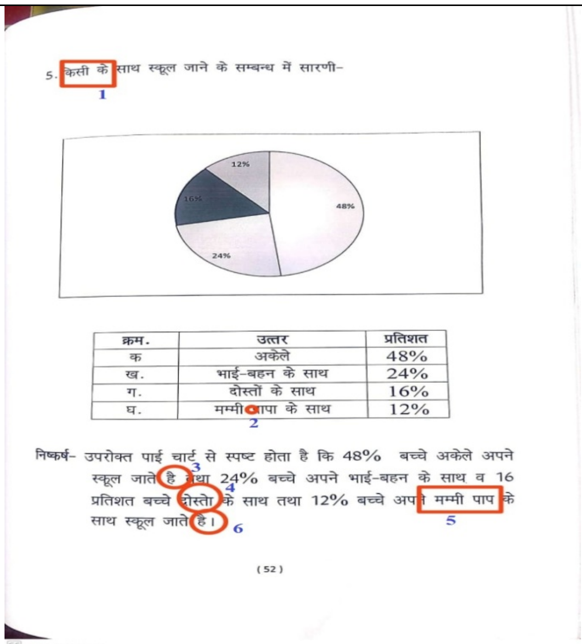
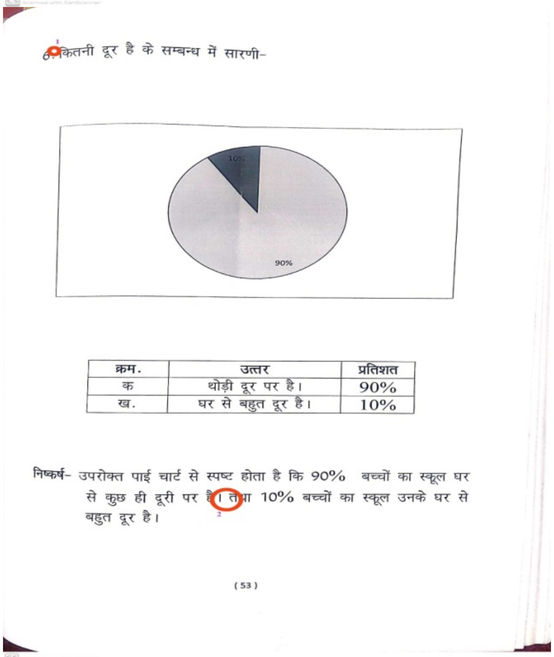
(49)
</td><td>
1. भाई-बहन
2. नहीं
3. 88% बच्चों
4. भाई-बहन
5. हैं
6. 12%
7. –
8. हैं
</td></tr>
<tr><td>


4. स्कूल न जाने के सम्बन्ध में सारणी–

क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	स्कूल दूर है।	25%
ख.	काम पर जाते है।	10%
ग.	मन नहीं करता है।	50%
घ.	मम्मी पापा नहीं भेजते है।	15%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि 25% बच्चों का स्कूल उनके घुर से दूर है 10% बच्चों का कहना है कि वो काम धन्धे पर जाते है। 50% बच्चों का स्कूल जाने का मन नहीं करता है। तथा 15% बच्चों का जवाब है कि उनके मम्मी पापा उन्हें स्कूल नही जोने देते है

(51)
</td><td>
1. कारणों के
2. हैं
3. मम्मी-पापा
4. ,
5. –
6. उत्तर
7. नहीं भेजते हैं।
नोट- प्रश्नावली में दी गयी शब्दावली का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।
</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
	1. किसके 2. मम्मी-पापा 3. हैं 4. दोस्तों 5. मम्मी-पापा 6. हैं।
	1. विद्यालय 2. निरर्थक चिह्न

Screenshot 1:

5. किसी के साथ स्कूल जाने के सम्बन्ध में सारणी–

क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	अकेले	48%
ख.	भाई–बहन के साथ	24%
ग.	दोस्तों के साथ	16%
घ.	मम्मी पापा के साथ	12%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि 48% बच्चे अकेले अपने स्कूल जाते है तथा 24% बच्चे अपने भाई–बहन के साथ व 16 प्रतिशत बच्चे दोस्तो के साथ तथा 12% बच्चे अपने मम्मी पाप के साथ स्कूल जाते है।

(52)

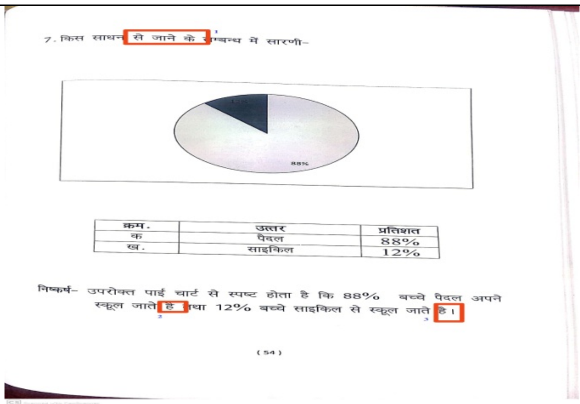
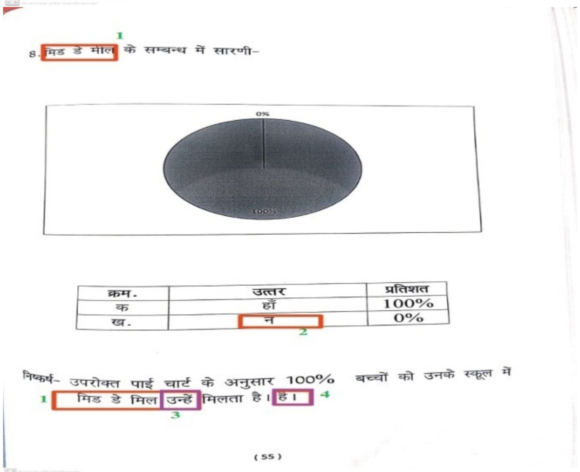
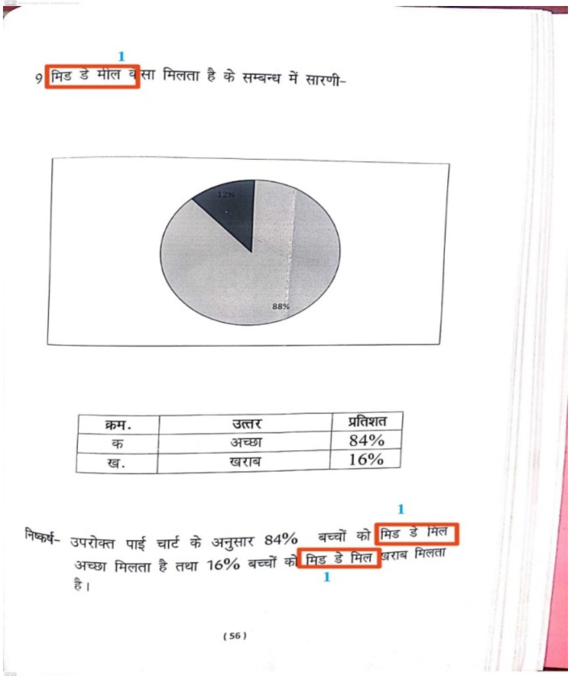
Screenshot 2:

6. कितनी दूर है के सम्बन्ध में सारणी–

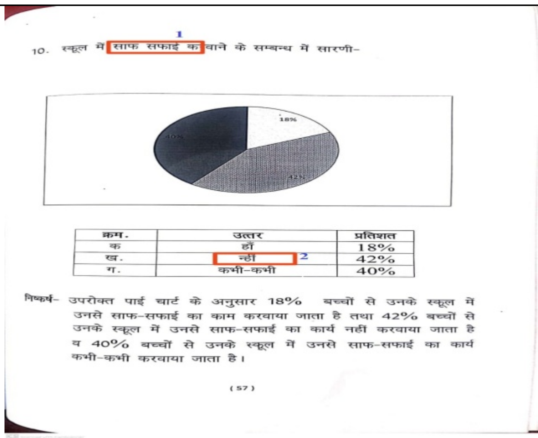
क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	थोड़ी दूर पर है।	90%
ख.	घर से बहुत दूर है।	10%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि 90% बच्चों का स्कूल घर से कुछ ही दूरी पर है। तथा 10% बच्चों का स्कूल उनके घर से बहुत दूर है।

(53)

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
7. किस साधन से जाने के सम्बन्ध में सारणी-
<table><tr><th>क्रम.</th><th>उत्तर</th><th>प्रतिशत</th></tr><tr><td>क</td><td>पैदल</td><td>88%</td></tr><tr><td>ख.</td><td>साइकिल</td><td>12%</td></tr></table>निष्कर्ष- उपरोक्त पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि 88% बच्चे पैदल अपने स्कूल जाते है तथा 12% बच्चे साइकिल से स्कूल जाते है।
(54)</td>
<td>1. द्वारा स्कूल पहुँचने के
2. हैं
3. हैं।</td></tr>
<tr><td>
8. मिड डे मील के सम्बन्ध में सारणी-
<table><tr><th>क्रम.</th><th>उत्तर</th><th>प्रतिशत</th></tr><tr><td>क</td><td>हाँ</td><td>100%</td></tr><tr><td>ख.</td><td>न</td><td>0%</td></tr></table>निष्कर्ष- उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 100% बच्चों को उनके स्कूल में मिड डे मिल उन्हें मिलता है। है।
(55)</td>
<td>1. मिड-डे मील
2. नहीं
3. निरर्थक शब्द
4. निरर्थक शब्द</td></tr>
<tr><td>
9 मिड डे मील वैसा मिलता है के सम्बन्ध में सारणी-
<table><tr><th>क्रम.</th><th>उत्तर</th><th>प्रतिशत</th></tr><tr><td>क</td><td>अच्छा</td><td>84%</td></tr><tr><td>ख.</td><td>खराब</td><td>16%</td></tr></table>निष्कर्ष- उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 84% बच्चों को मिड डे मिल अच्छा मिलता है तथा 16% बच्चों को मिड डे मिल खराब मिलता है।
(56)</td>
<td>1. मिड-डे मील</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



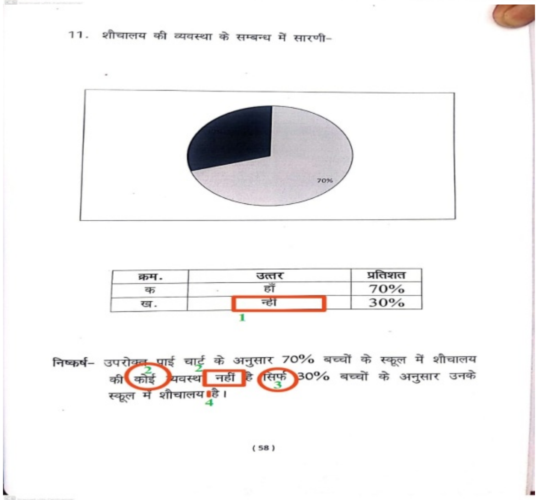
10. स्कूल में साफ सफाई करवाने के सम्बन्ध में सारणी–

क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	हाँ	18%
ख.	न्हीं	42%
ग.	कभी–कभी	40%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 18% बच्चों से उनके स्कूल में उनसे साफ–सफाई का काम करवाया जाता है तथा 42% बच्चों से उनके स्कूल में उनसे साफ–सफाई का कार्य नहीं करवाया जाता है व 40% बच्चों से उनके स्कूल में उनसे साफ–सफाई का कार्य कभी–कभी करवाया जाता है।

(57)

1. साफ-सफाई
2. नहीं



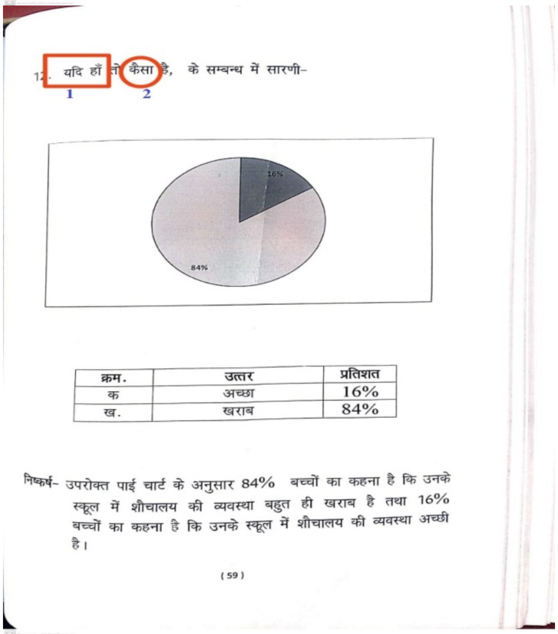
11. शौचालय की व्यवस्था के सम्बन्ध में सारणी–

क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	हाँ	70%
ख.	न्हीं	30%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 70% बच्चों के स्कूल में शौचालय की कोई व्यवस्थ नहीं है सिर्फ 30% बच्चों के अनुसार उनके स्कूल में शौचालय है।

(58)

1. नहीं
2. निरर्थक शब्द
3. तथा
4. नहीं



12. यदि हाँ तो कैसा है, के सम्बन्ध में सारणी–

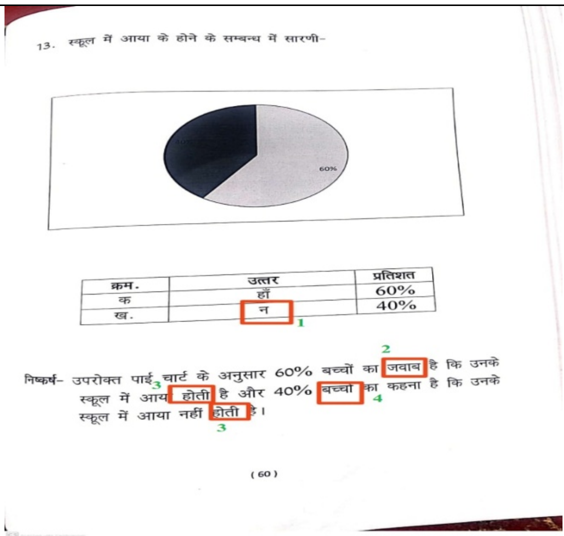
क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	अच्छा	16%
ख.	खराब	84%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 84% बच्चों का कहना है कि उनके स्कूल में शौचालय की व्यवस्था बहुत ही खराब है तथा 16% बच्चों का कहना है कि उनके स्कूल में शौचालय की व्यवस्था अच्छी है।

(59)

1. यदि शौचालय व्यवस्था उपलब्ध है,
2. कैसी

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



13. स्कूल में आया के होने के सम्बन्ध में सारणी–

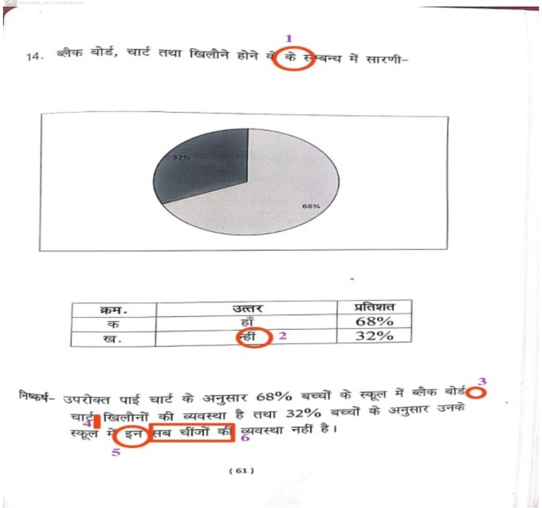
क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	हाँ	60%
ख.	न	40%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 60% बच्चों का जवाब है कि उनके स्कूल में आया होती है और 40% बच्चो का कहना है कि उनके स्कूल में आया नहीं होती है।

(60)

1. नहीं
2. उत्तर
3. निरर्थक शब्द
4. बच्चों

नोट- प्रश्नावली में दी गयी शब्दावली का ही प्रयोग किया जाना चाहिए



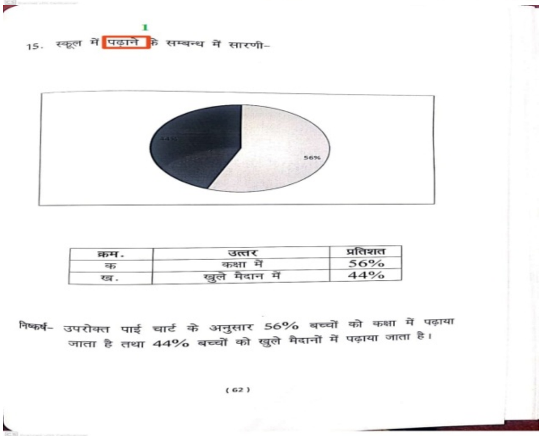
14. ब्लैक बोर्ड, चार्ट तथा खिलौने होने के सम्बन्ध में सारणी–

क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	हाँ	68%
ख.	नहीं	32%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 68% बच्चों के स्कूल में ब्लैक बोर्ड चार्ट खिलौनों की व्यवस्था है तथा 32% बच्चों के अनुसार उनके स्कूल में इन सब चीजों की व्यवस्था नहीं है।

(61)

1. निरर्थक शब्द
2. नहीं
3. ,
4. तथा
5. इनकी
6. निरर्थक शब्द



15. स्कूल में पढ़ाने के सम्बन्ध में सारणी–

क्रम.	उत्तर	प्रतिशत
क	कक्षा में	56%
ख.	खुले मैदान में	44%

निष्कर्ष– उपरोक्त पाई चार्ट के अनुसार 56% बच्चों को कक्षा में पढ़ाया जाता है तथा 44% बच्चों को खुले मैदानों में पढ़ाया जाता है।

(62)

1. कक्षाओं के संचालन

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
9	**Findings and Implications**	**Max Score = 5**		
9.1	Are the findings logically presented?	No		0
9.2	Do the tables/graphs have appropriate titles?	No		0
9.3	Are the tables/graphs explained in the text?	Yes		1
9.4	Are the findings related to the discussion in the introductory chapter?	No		0
9.5	Are the hypotheses/objectives of the research addressed adequately?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		1

Comments:

शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण का परिणाम तो प्रस्तुत किया गया है, किन्तु परिणाम तार्किक रूप से प्रस्तुत नहीं किये गए हैं; क्योंकि शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण में प्रयुक्त पाई-चार्ट और उनके शीर्षक उचित ढंग से नहीं लिखे जाने के साथ-साथ उनकी व्याख्या भी स्पष्ट रूप से प्रस्तुत नहीं की गयी है।

शोधकर्त्री द्वारा वर्णित प्रदत्तों के विश्लेषण का परिणाम प्रारम्भिक अध्याय से तो सम्बन्धित है, किन्तु उनकी व्याख्या सही ढंग से न होने के कारण परिणामों का तारतम्य प्रारम्भिक अध्याय से नहीं बैठ रहा है। शोधकर्त्री द्वारा परिणामों एवं पाई चार्टों का विश्लेषण सही ढंग से प्रस्तुत न किये जाने के कारण परिणाम, शोध के उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को उचित ढंग से वर्णित किये जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

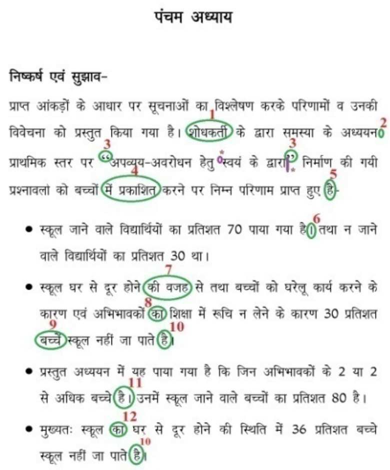
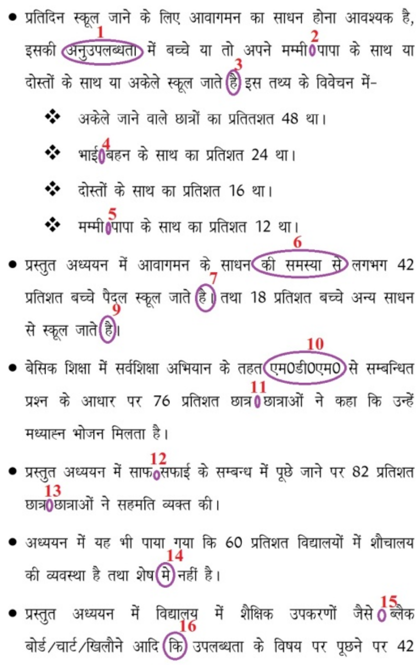
Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
10	**Summary and Conclusions**	**Max Score = 3**		
10.1	Is the summary presented comprehensive?	No		0
10.2	Are the conclusions supported by data?	No		0
10.3	Are there recommendations for future research?	Yes		1
	Sub-Total	**Actual Max =**		1

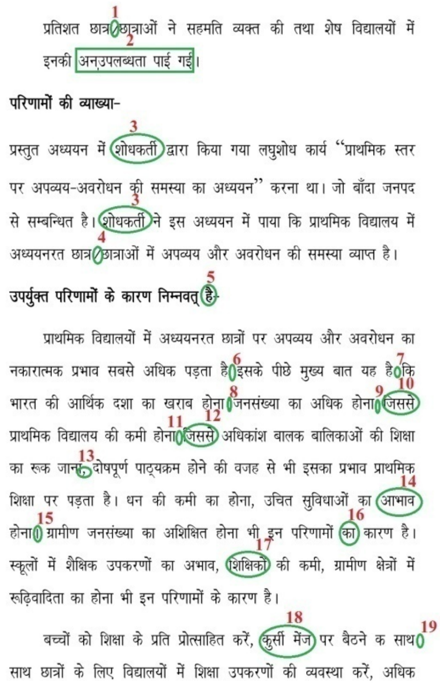
Comments:

सारांश किसी भी पाठ का वह भाग होता है, जिसे पढ़कर सम्पूर्ण पाठ के बारे में समझा जा सकता है, जबकि शोधकर्त्री द्वारा इस लघु-शोध कार्य का सारांश प्रस्तुत नहीं किया गया है।

किसी भी लघु-शोध कार्य का निष्कर्ष उसके प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण पर निर्भर करता है। यदि प्रदत्तों का संकलन तथा विश्लेषण सही ढंग से किया जाएगा, तभी निष्कर्ष सही और विश्वसनीय होंगे अन्यथा नहीं, जबकि शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों का संकलन पर्याप्त रूप से नहीं किया गया है; जिसके कारण शोधकर्त्री द्वारा वर्णित निष्कर्ष गलत व अविश्वसनीय हो गये हैं। शोधकर्त्री द्वारा भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष, शैक्षिक महत्व, भावी अध्ययन हेतु सुझाव एवं सारांश में प्रयुक्त हुए गलत शब्दों का सही रूप-

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	**अशुद्ध शब्दों का सही रूप**
 पंचम अध्याय **निष्कर्ष एवं सुझाव-** प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सूचनाओं का विश्लेषण करके परिणामों व उनकी विवेचना को प्रस्तुत किया गया है। शोधकर्ता के द्वारा समस्या के अध्ययन0 प्राथमिक स्तर पर "अपव्यय-अवरोधन हेतु 0स्वयं के द्वारा" निर्माण की गयी प्रश्नावलो को बच्चों में प्रकाशित करने पर निम्न परिणाम प्राप्त हुए है- • स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 70 पाया गया है। तथा न जाने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 30 था। • स्कूल घर से दूर होने की वजह से तथा बच्चों को घरेलू कार्य करने के कारण एवं अभिभावकों का शिक्षा में रूचि न लेने के कारण 30 प्रतिशत बच्चें स्कूल नहीं जा पाते है। • प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया है कि जिन अभिभावकों के 2 या 2 से अधिक बच्चे है। उनमें स्कूल जाने वाले बच्चों का प्रतिशत 80 है। • मुख्यतः स्कूल का घर से दूर होने की स्थिति में 36 प्रतिशत बच्चे स्कूल नहीं जा पाते है।	1. शोधकर्त्री 2. हेतु 3. Inverted Comma का अनुचित प्रयोग 4. पर प्रशासित 5. निरर्थक शब्द 6. निरर्थक चिह्न 7. के कारण 8. द्वारा 9. बच्चे 10. हैं 11. हैं निरर्थक चिह्न 12. के * Single Inverted Comma का प्रयोग किया जाना चाहिए।
 • प्रतिदिन स्कूल जाने के लिए आवागमन का साधन होना आवश्यक है, इसकी अनुउपलब्धता में बच्चे या तो अपने मम्मी0पापा के साथ या दोस्तों के साथ या अकेले स्कूल जाते है इस तथ्य के विवेचन में- ❖ अकेले जाने वाले छात्रों का प्रतितशत 48 था। ❖ भाई0बहन के साथ का प्रतिशत 24 था। ❖ दोस्तों के साथ का प्रतिशत 16 था। ❖ मम्मी0पापा के साथ का प्रतिशत 12 था। • प्रस्तुत अध्ययन में आवागमन के साधन की समस्या से लगभग 42 प्रतिशत बच्चे पैदल स्कूल जाते है। तथा 18 प्रतिशत बच्चे अन्य साधन से स्कूल जाते है। • बेसिक शिक्षा में सर्वशिक्षा अभियान के तहत एम0डी0एम0 से सम्बन्धित प्रश्न के आधार पर 76 प्रतिशत छात्र0छात्राओं ने कहा कि उन्हें मध्याह्न भोजन मिलता है। • प्रस्तुत अध्ययन में साफ0सफाई के सम्बन्ध में पूछे जाने पर 82 प्रतिशत छात्र0छात्राओं ने सहमति व्यक्त की। • अध्ययन में यह भी पाया गया कि 60 प्रतिशत विद्यालयों में शौचालय की व्यवस्था है तथा शेष मे नहीं है। • प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय में शैक्षिक उपकरणों जैसे 0 ब्लैक बोर्ड/चार्ट/खिलौने आदि कि उपलब्धता के विषय पर पूछने पर 42	1. अनुपलब्धता 2. मम्मी-पापा 3. हैं 4. भाई-बहन 5. भाई-बहन 6. के सम्बन्ध में 7. हैं निरर्थक चिह्न 8. 9. हैं 10. एम. डी. एम. (एमडीएम) 11. छात्र-छात्राओं 12. साफ-सफाई 13. छात्र-छात्राओं 14. में 15. – 16. की

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने सहमति व्यक्त की तथा शेष विद्यालयों में इनकी अनउपलब्धता पाई गई।

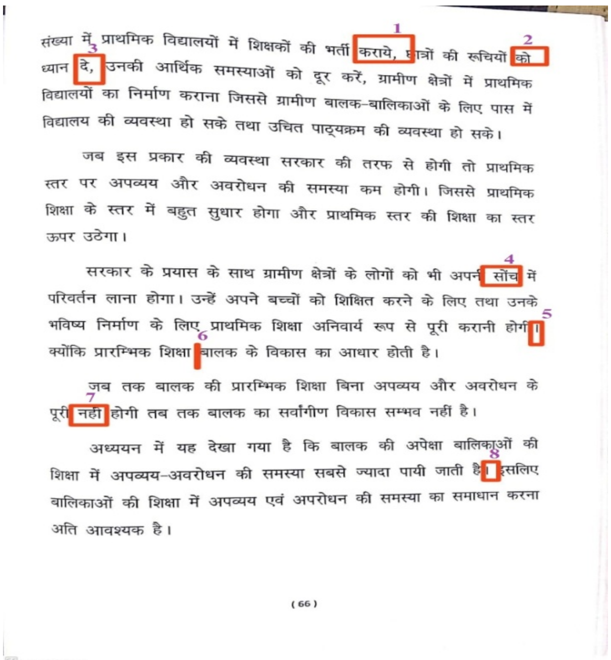
परिणामों की व्याख्या-

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ती द्वारा किया गया लघुशोध कार्य "प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन" करना था। जो बाँदा जनपद से सम्बन्धित है। शोधकर्ती ने इस अध्ययन में पाया कि प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं में अपव्यय और अवरोधन की समस्या व्याप्त है।

उपर्युक्त परिणामों के कारण निम्नवत् है-

प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों पर अपव्यय और अवरोधन का नकारात्मक प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है इसके पीछे मुख्य बात यह है कि भारत की आर्थिक दशा का खराब होना जनसंख्या का अधिक होना जिससे प्राथमिक विद्यालय की कमी होना जिससे अधिकांश बालक बालिकाओं की शिक्षा का रूक जाना, दोषपूर्ण पाठ्यक्रम होने की वजह से भी इसका प्रभाव प्राथमिक शिक्षा पर पड़ता है। धन की कमी का होना, उचित सुविधाओं का आभाव होना ग्रामीण जनसंख्या का अशिक्षित होना भी इन परिणामों का कारण है। स्कूलों में शैक्षिक उपकरणों का अभाव, शिक्षिकों की कमी, ग्रामीण क्षेत्रों में रूढ़िवादिता का होना भी इन परिणामों के कारण है।

बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करें, कुर्सी मेंज पर बैठने क साथ साथ छात्रों के लिए विद्यालयों में शिक्षा उपकरणों की व्यवस्था करें, अधिक



संख्या में प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की भर्ती कराये, छात्रों की रूचियों को ध्यान दे, उनकी आर्थिक समस्याओं को दूर करें, ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक विद्यालयों का निर्माण कराना जिससे ग्रामीण बालक-बालिकाओं के लिए पास में विद्यालय की व्यवस्था हो सके तथा उचित पाठ्यक्रम की व्यवस्था हो सके।

जब इस प्रकार की व्यवस्था सरकार की तरफ से होगी तो प्राथमिक स्तर पर अपव्यय और अवरोधन की समस्या कम होगी। जिससे प्राथमिक शिक्षा के स्तर में बहुत सुधार होगा और प्राथमिक स्तर की शिक्षा का स्तर ऊपर उठेगा।

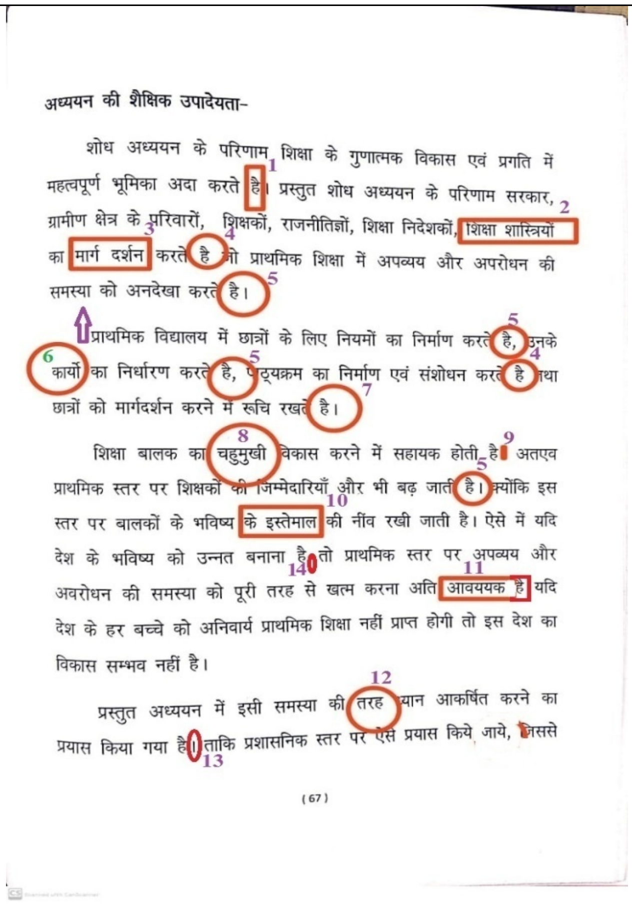
सरकार के प्रयास के साथ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को भी अपनी सोंच में परिवर्तन लाना होगा। उन्हें अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए तथा उनके भविष्य निर्माण के लिए प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य रूप से पूरी करानी होगी। क्योंकि प्रारम्भिक शिक्षा बालक के विकास का आधार होती है।

जब तक बालक की प्रारम्भिक शिक्षा बिना अपव्यय और अवरोधन के पूरी नहीं होगी तब तक बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है।

अध्ययन में यह देखा गया है कि बालक की अपेक्षा बालिकाओं की शिक्षा में अपव्यय-अवरोधन की समस्या सबसे ज्यादा पायी जाती है। इसलिए बालिकाओं की शिक्षा में अपव्यय एवं अपरोधन की समस्या का समाधान करना अति आवश्यक है।

(66)
</td><td>
1. -
2. अनुपलब्धता पायी गयी
3. शोधकर्त्री
4. -
5. हैं
6. ।
7. ,
8. ,
9. ,
10. निरर्थक शब्द
11. ,
12. निरर्थक शब्द
13. तथा
14. अभाव
15. तथा
16. के
17. शिक्षकों
18. कुर्सी-मेज
19. –

1. करायें
2. का
3. दें
4. सोच
5. निरर्थक चिह्न
6. ही
7. नहीं
8. निरर्थक चिह्न
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>


अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता-

शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा के गुणात्मक विकास एवं प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम सरकार, ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों, शिक्षकों, राजनीतिज्ञों, शिक्षा निदेशकों, शिक्षा शास्त्रियों का मार्ग दर्शन करते है जो प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय और अपरोधन की समस्या को अनदेखा करते है।

प्राथमिक विद्यालय में छात्रों के लिए नियमों का निर्माण करते है, उनके कार्यो का निर्धारण करते है, पाठ्यक्रम का निर्माण एवं संशोधन करते है तथा छात्रों को मार्गदर्शन करने में रूचि रखते है।

शिक्षा बालक का चहुमुखी विकास करने में सहायक होती है। अतएव प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की जिम्मेदारियाँ और भी बढ़ जाती है। क्योंकि इस स्तर पर बालकों के भविष्य के इस्तेमाल की नींव रखी जाती है। ऐसे में यदि देश के भविष्य को उन्नत बनाना है तो प्राथमिक स्तर पर अपव्यय और अवरोधन की समस्या को पूरी तरह से खत्म करना अति आवययक है यदि देश के हर बच्चे को अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा नहीं प्राप्त होगी तो इस देश का विकास सम्भव नहीं है।

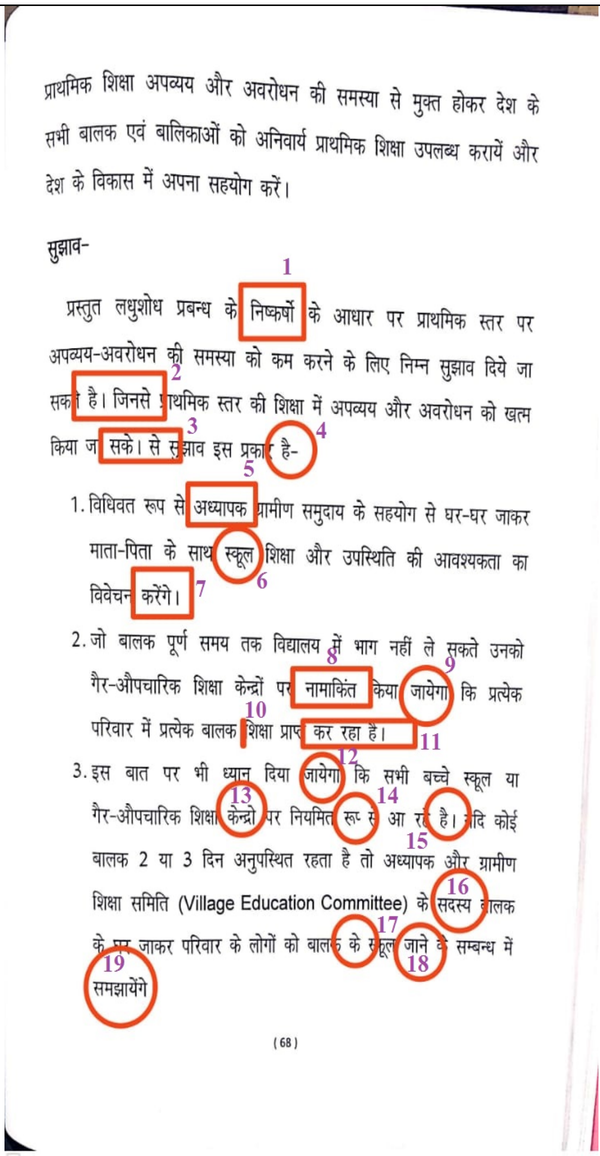
प्रस्तुत अध्ययन में इसी समस्या की तरह ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया है। ताकि प्रशासनिक स्तर पर ऐसे प्रयास किये जाये, जिससे

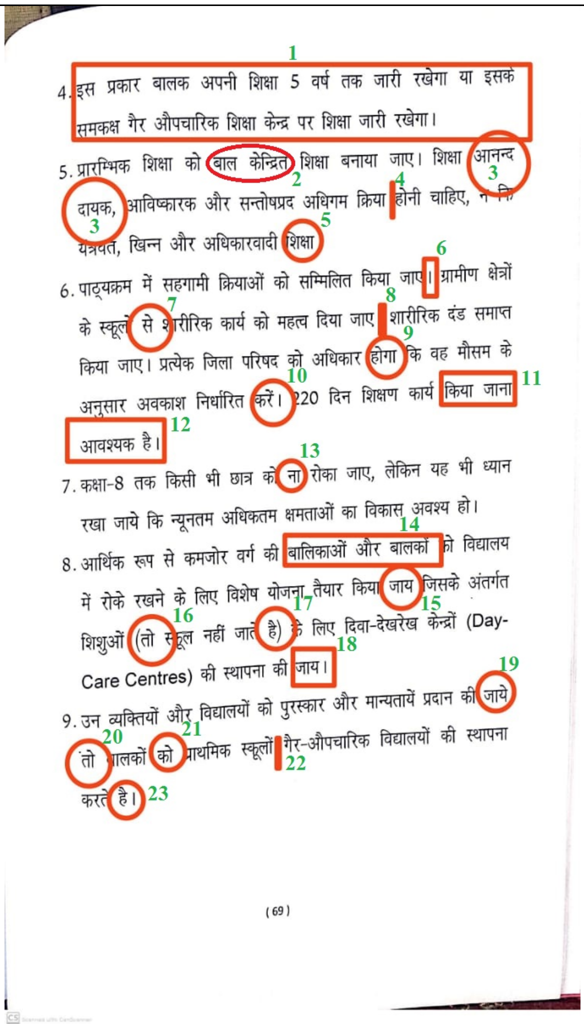
(67)
</td><td>

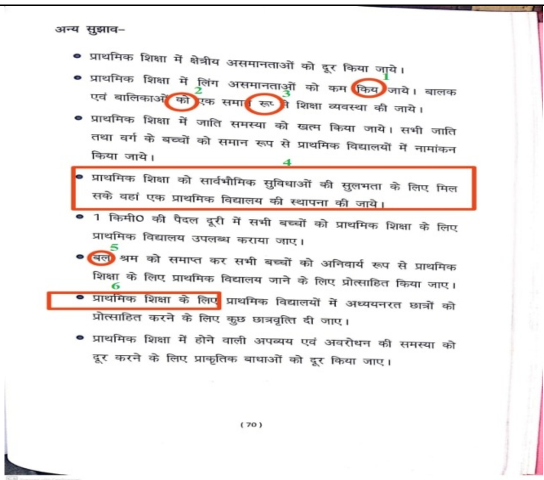
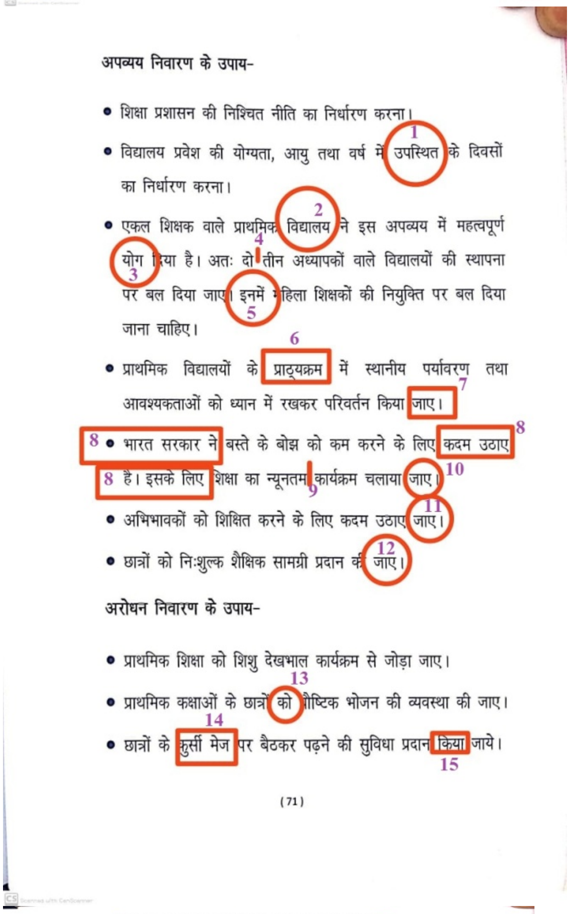
1. हैं
2. शिक्षाशास्त्रियों
3. मार्गदर्शन
4. हैं,
5. हैं।
6. कार्यों
7. हैं।
8. चहुँमुखी
9. ।
10. निरर्थक शब्द
11. आवश्यक है।
12. ओर
13. निरर्थक चिह्न

नोट- यह अलग अनुच्छेद नहीं है। इसे रनिंग में लिखा जाना चाहिए।

14. ,
</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 प्राथमिक शिक्षा अपव्यय और अवरोधन की समस्या से मुक्त होकर देश के सभी बालक एवं बालिकाओं को अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करायें और देश के विकास में अपना सहयोग करें। सुझाव- प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध के निष्कर्षो के आधार पर प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या को कम करने के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते है। जिनसे प्राथमिक स्तर की शिक्षा में अपव्यय और अवरोधन को खत्म किया जा सके। ये सुझाव इस प्रकार है- 1. विधिवत रूप से अध्यापक ग्रामीण समुदाय के सहयोग से घर-घर जाकर माता-पिता के साथ स्कूल शिक्षा और उपस्थिति की आवश्यकता का विवेचन करेंगे। 2. जो बालक पूर्ण समय तक विद्यालय में भाग नहीं ले सकते उनको गैर-औपचारिक शिक्षा केन्द्रों पर नामाकिंत किया जायेगा कि प्रत्येक परिवार में प्रत्येक बालक शिक्षा प्राप्त कर रहा है। 3. इस बात पर भी ध्यान दिया जायेगा कि सभी बच्चे स्कूल या गैर-औपचारिक शिक्षा केन्द्रो पर नियमित रूप से आ रहे है। यदि कोई बालक 2 या 3 दिन अनुपस्थित रहता है तो अध्यापक और ग्रामीण शिक्षा समिति (Village Education Committee) के सदस्य बालक के घर जाकर परिवार के लोगों को बालक के स्कूल जाने के सम्बन्ध में समझायेंगे (68)	1. निष्कर्षों 2. हैं; जिनके द्वारा 3. सकता है। ये 4. हैं 5. अध्यापकों द्वारा 6. स्कूली 7. किया जाना चाहिए। 8. नामांकित 9. जाना चाहिए; जिससे 10. को 11. हो सके। 12. जाय 13. केन्द्रों 14. रूप 15. हैं। 16. सदस्यों द्वारा 17. को नियमित रूप से 18. भेजने 19. समझाया जाना चाहिए।

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 4. इस प्रकार बालक अपनी शिक्षा 5 वर्ष तक जारी रखेगा या इसके समकक्ष गैर औपचारिक शिक्षा केन्द्र पर शिक्षा जारी रखेगा। 5. प्रारम्भिक शिक्षा को बाल केन्द्रित शिक्षा बनाया जाए। शिक्षा आनन्द दायक, आविष्कारक और सन्तोषप्रद अधिगम क्रिया होनी चाहिए, न कि यंत्रवत, खिन्न और अधिकारवादी शिक्षा 6. पाठ्यक्रम में सहगामी क्रियाओं को सम्मिलित किया जाए। ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों से शारीरिक कार्य को महत्व दिया जाए शारीरिक दंड समाप्त किया जाए। प्रत्येक जिला परिषद को अधिकार होगा कि वह मौसम के अनुसार अवकाश निर्धारित करें। 220 दिन शिक्षण कार्य किया जाना आवश्यक है। 7. कक्षा-8 तक किसी भी छात्र को ना रोका जाए, लेकिन यह भी ध्यान रखा जाये कि न्यूनतम अधिकतम क्षमताओं का विकास अवश्य हो। 8. आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की बालिकाओं और बालकों को विद्यालय में रोके रखने के लिए विशेष योजना तैयार किया जाय जिसके अंतर्गत शिशुओं (तो स्कूल नहीं जाते है) के लिए दिवा-देखरेख केन्द्रों (Day-Care Centres) की स्थापना की जाय। 9. उन व्यक्तियों और विद्यालयों को पुरस्कार और मान्यतायें प्रदान की जाये तो बालकों को प्राथमिक स्कूलों गैर-औपचारिक विद्यालयों की स्थापना करते है। (69)	1. यह सुझाव नहीं हैं। 2. बाल-केन्द्रित 3. आनन्ददायक 4. के रूप में 5. निरर्थक शब्द 6. , 7. में 8. तथा 9. दिया जाए 10. करे तथा 11. किए जाने की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए। 12. निरर्थक शब्द 13. न 14. बालक एवं बालिकाओं 15. जाए 16. जो 17. हैं, 18. जाए। 19. जाए 20. जो 21. के लिए 22. तथा 23. हैं।

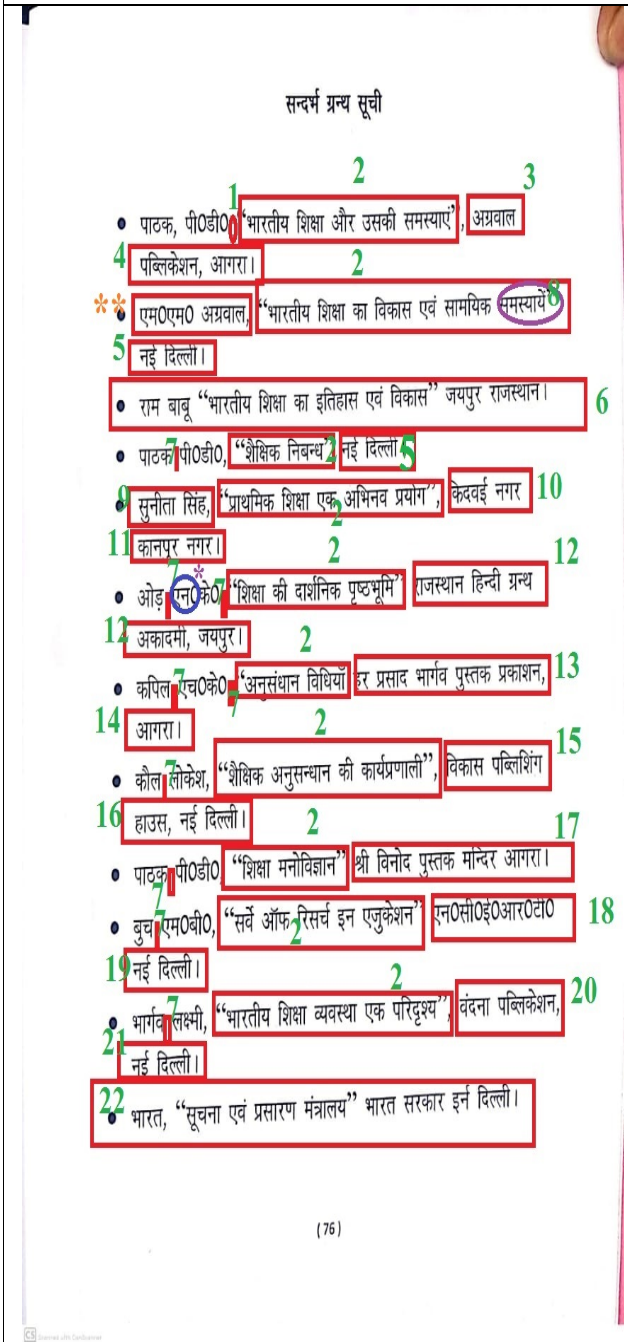
अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 अन्य सुझाव– • प्राथमिक शिक्षा में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर किया जाये। • प्राथमिक शिक्षा में लिंग असमानताओं को कम किय जाये। बालक एवं बालिकाओं को एक समान रूप से शिक्षा व्यवस्था की जाये। • प्राथमिक शिक्षा में जाति समस्या को खत्म किया जाये। सभी जाति तथा वर्ग के बच्चों को समान रूप से प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन किया जाये। • प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक सुविधाओं की सुलभता के लिए मिल सके वहां एक प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की जाये। • 1 किमी0 की पैदल दूरी में सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध कराया जाए। • बल श्रम को समाप्त कर सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से प्राथमिक शिक्षा के लिए प्राथमिक विद्यालय जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। • प्राथमिक शिक्षा के लिए प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ छात्रवृत्ति दी जाए। • प्राथमिक शिक्षा में होने वाली अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या को दूर करने के लिए प्राकृतिक बाधाओं को दूर किया जाए। (70)	1. किया 2. के लिए 3. रूप 4. अर्थ स्पष्ट नहीं है। 5. बाल 6. निरर्थक शब्द
 अपव्यय निवारण के उपाय- • शिक्षा प्रशासन की निश्चित नीति का निर्धारण करना। • विद्यालय प्रवेश की योग्यता, आयु तथा वर्ष में उपस्थित के दिवसों का निर्धारण करना। • एकल शिक्षक वाले प्राथमिक विद्यालय ने इस अपव्यय में महत्वपूर्ण योग दिया है। अतः दो तीन अध्यापकों वाले विद्यालयों की स्थापना पर बल दिया जाए। इनमें महिला शिक्षकों की नियुक्ति पर बल दिया जाना चाहिए। • प्राथमिक विद्यालयों के प्राठ्यक्रम में स्थानीय पर्यावरण तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर परिवर्तन किया जाए। • भारत सरकार ने बस्ते के बोझ को कम करने के लिए कदम उठाए है। इसके लिए शिक्षा का न्यूनतम कार्यक्रम चलाया जाए। • अभिभावकों को शिक्षित करने के लिए कदम उठाए जाए। • छात्रों को निःशुल्क शैक्षिक सामग्री प्रदान की जाए। अरोधन निवारण के उपाय- • प्राथमिक शिक्षा को शिशु देखभाल कार्यक्रम से जोड़ा जाए। • प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों को पौष्टिक भोजन की व्यवस्था की जाए। • छात्रों के कुर्सी मेज पर बैठकर पढ़ने की सुविधा प्रदान किया जाये। (71)	1. उपस्थिति 2. विद्यालयों 3. योगदान 4. – 5. इसमें 6. पाठ्यक्रम 7. जाना चाहिए। 8. निरर्थक शब्द 9. स्तर 10. जाना चाहिए। 11. जाने चाहिए। 12. जानी चाहिए। 13. के लिए 14. कुर्सी-मेज 15. की
	1. अपनाया

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
11	**Referencing**	**Max Score = 5**		
11.1	Are the in-test references available at the end?	Yes		1
11.2	Are the references presented accurately?	No		0
11.3	Are the references show uniformity?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		1

Comments:

इस लघु-शोध प्रबन्ध की सम्पूर्ण समीक्षा करने के पश्चात ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इस लघु शोध में जो सन्दर्भ ग्रन्थ सूची लिखी गयी है, उसे केवल औपचारिकता को पूर्ण करने के लिए लिखा गया है; क्योंकि शोधकर्त्री द्वारा लघु शोध-प्रबन्ध हेतु कुछ विषय-वस्तु इण्टरनेट के माध्यम से लिखी गयी हैं; जिनका वर्णन इस सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में नहीं किया गया है; इससे यह सिद्ध होता है कि सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की विषय वस्तु से किसी प्रकार की एकरूपता नहीं है।

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पाठक, पी0डी0 'भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- एम0एम0 अग्रवाल, "भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्यायें" नई दिल्ली।
- राम बाबू "भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास" जयपुर राजस्थान।
- पाठक, पी0डी0, "शैक्षिक निबन्ध" नई दिल्ली।
- सुनीता सिंह, "प्राथमिक शिक्षा एक अभिनव प्रयोग", केदवई नगर कानपुर नगर।
- ओड़ एन0के0 "शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- कपिल एच0के0 'अनुसंधान विधियाँ' हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
- कौल लोकेश, "शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली", विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- पाठक पी0डी0 "शिक्षा मनोविज्ञान" श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
- बुच एम0बी0, "सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन" एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली।
- भार्गव लक्ष्मी, "भारतीय शिक्षा व्यवस्था एक परिदृश्य", वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- भारत, "सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय" भारत सरकार इर्न दिल्ली।

(76)

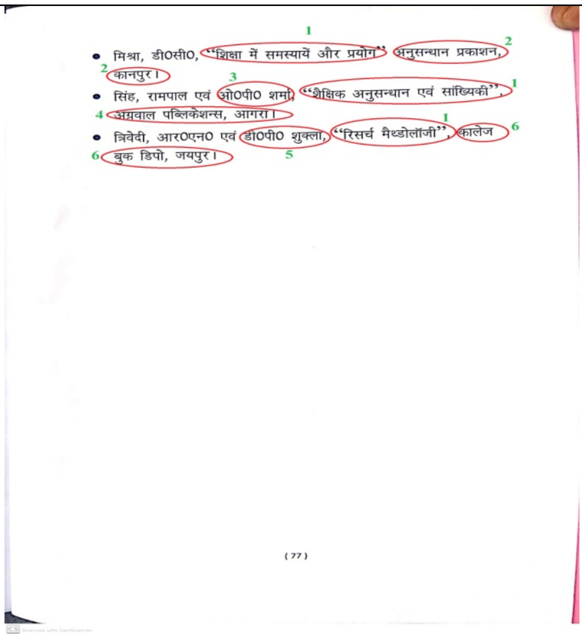
1. ,
2. पुस्तक का शीर्षक बोल्ड, इटैलिक या सिंगल इनवर्टेड कॉमा में लिखा जाना चाहिए।
3. आगरा:
4. अग्रवाल पब्लिकेशन

   ** अग्रवाल, एम.एम.,
5. नई दिल्ली: प्रकाशक का नाम लिखा जाना चाहिए।
6. दिया गया सन्दर्भ स्पष्ट नहीं हैं।
7. ,
8.
9. सिंह, सुनीता,
10. (प्रकाशित शहर का मुख्य नाम लिखा जाना चाहिए।)
11. कानपुर नगर: प्रकाशन का नाम लिखा जाना चाहिए।

   * ओड, एल. के.,
12. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
13. आगरा:
14. हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन।
15. नई दिल्ली:
16. विकास पब्लिशिंग हाउस।
17. आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

नोट- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में प्रयुक्त किसी व्यक्ति के नाम के पहले उपाधि या सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

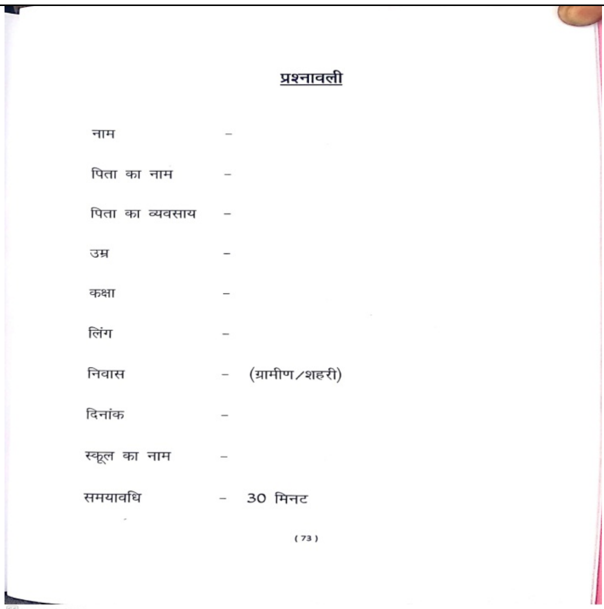
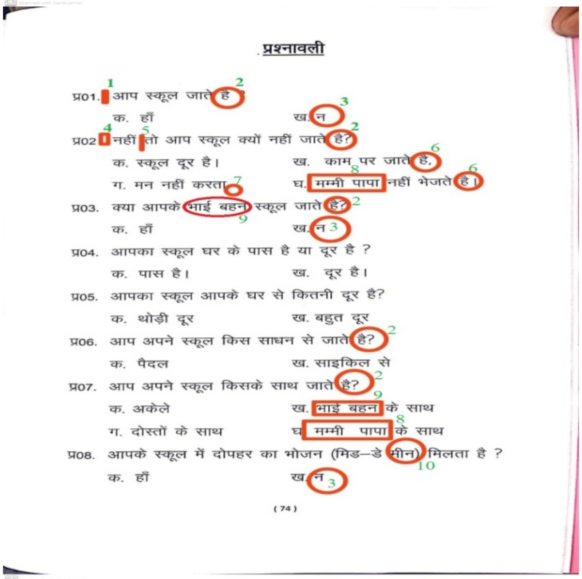
18. नई दिल्ली:
19. एनसीईआरटी।
20. नई दिल्ली:
21. वन्दना पब्लिकेशन
22. दिया गया सन्दर्भ स्पष्ट नहीं है।

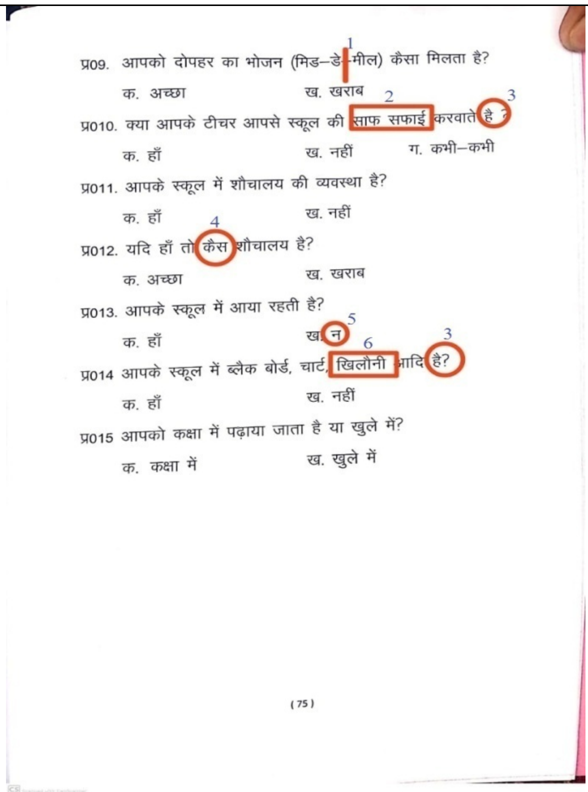
<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
• मिश्रा, डी0सी0, “शिक्षा में समस्यायें और प्रयोग” अनुसन्धान प्रकाशन, कानपुर।
• सिंह, रामपाल एवं ओ0पी0 शर्मा, “शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी”, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
• त्रिवेदी, आर0एन0 एवं डी0पी0 शुक्ला, “रिसर्च मैथ्डोलॉजी”, कालेज बुक डिपो, जयपुर।
(77)</td><td>1. पुस्तक का शीर्षक बोल्ड, इटैलिक या सिन्गल इनवर्टेड कॉमा में लिखा जाना चाहिए था।
2. कानपुर: अनुसन्धान प्रकाशन।
3. शर्मा, ओ.पी.,
4. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।
5. शुक्ला, डी.पी.,
6. जयपुरः कॉलेज बुक डिपो।
नोट-
1. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित किसी भी पुस्तक का प्रकाशन वर्ष नहीं लिखा गया है, जो कि लिखा जाना चाहिए।
2. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में जब किसी पुस्तक का सन्दर्भ में लिखा जाता है, तो उसका निम्न क्रम होता है-
• लेखक का नाम
• प्रकाशन वर्ष
• पुस्तक का शीर्षक
• प्रकाशन स्थान एवं प्रकाशक का नाम
3. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची अपूर्ण एवं अपर्याप्त है।
4. इसमें शोधगंगा तथा अन्य किसी भी प्रकार की वेबसाइट का उल्लेख नहीं किया गया है।
5. किसी भी फुटनोट के सन्दर्भ का उल्लेख नहीं किया गया है।
6. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित नामों का लघु शोध के अन्दर कहीं भी उल्लेख नहीं है तथा लघु शोध के अन्दर उल्लेखित किसी भी नाम का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में भी उल्लेख नहीं है।</td></tr>
</table>

Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
12	**Annexure**	**Max Score = 3**		
12.1	Are the annexure comprehensive?	No		0
12.2	Are the annexure presented systematically?	No		0
12.3	Do the annexure give original data?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		0

Comments:

शोधकर्त्री द्वारा परिशिष्ट को सही जगह नहीं लगाया गया है। इसे सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के बाद लगाया जाना चाहिए था, किन्तु शोधकर्त्री ने सन्दर्भ ग्रन्थ सूची से पहले लगाया है तथा परिशिष्ट के रूप में केवल 'स्वयं द्वारा निर्मित प्रश्नावली' को ही लगाया है, जोकि अपर्याप्त है। शोधकर्त्री द्वारा परिशिष्ट को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करते हुए बाँदा जनपद का मैप, प्रदत्तों के संकलन से सम्बन्धित चित्रावली, प्रदत्त संकलन की शीट, 'स्वयं द्वारा निर्मित प्रश्नावली' के प्रथम प्रारूप, द्वितीय प्रारूप, उत्तर कुञ्जी एवं जीवन-वृत्त लगाना चाहिए था, लेकिन शोधकर्त्री ने इनमें से किसी को भी नहीं लगाया गया है।

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
</td><td>नोट-
प्रश्नावली सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के बाद परिशिष्ट में लगायी जानी चाहिए। प्रश्नावली के मुख्य पृष्ठ, प्रश्नावली के निर्माता का नाम तथा प्रश्नावली पूरी करने के सम्बन्ध में निर्देशों का उल्लेख किया जाना चाहिए।</td></tr>
<tr><td>
</td><td>1. क्या
2. हैं?
3. नहीं
4. यदि
5. ,
6. हैं।
7. ।
8. मम्मी-पापा
9. भाई-बहन
10. मिड-डे मील</td></tr>
</table>

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 प्र09. आपको दोपहर का भोजन (मिड–डे-मील) कैसा मिलता है? क. अच्छा ख. खराब प्र010. क्या आपके टीचर आपसे स्कूल की साफ सफाई करवाते है ? क. हाँ ख. नहीं ग. कभी–कभी प्र011. आपके स्कूल में शौचालय की व्यवस्था है? क. हाँ ख. नहीं प्र012. यदि हाँ तो कैस शौचालय है? क. अच्छा ख. खराब प्र013. आपके स्कूल में आया रहती है? क. हाँ ख. न प्र014 आपके स्कूल में ब्लैक बोर्ड, चार्ट, खिलौनी आदि है? क. हाँ ख. नहीं प्र015 आपको कक्षा में पढ़ाया जाता है या खुले में? क. कक्षा में ख. खुले में (75)	1. निरर्थक चिह्न 2. साफ-सफाई 3. हैं? 4. कैसा 5. नहीं 6. खिलौने

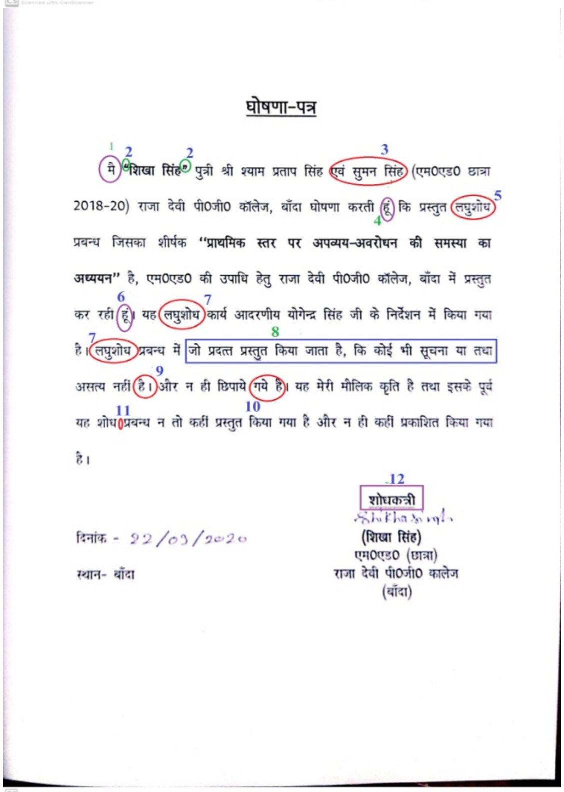
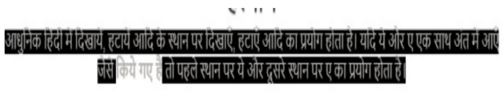
Research Report Evaluation Pro forma				
	Criteria	**Score Rule (points)**	**Not Applicable (NA)**	**Score**
13	**General Indicators**	**Max Score = 4**		
13.1	Is the research report without major typing mistakes?	No		0
13.2	Is the research report presented well (margin, typesetting, tables, etc.)?	No		0
13.3	Is the binding of the research report proper?	Yes		1
13.4	Is the description accurate and of a reasonable length?	No		0
	Sub-Total	**Actual Max =**		1

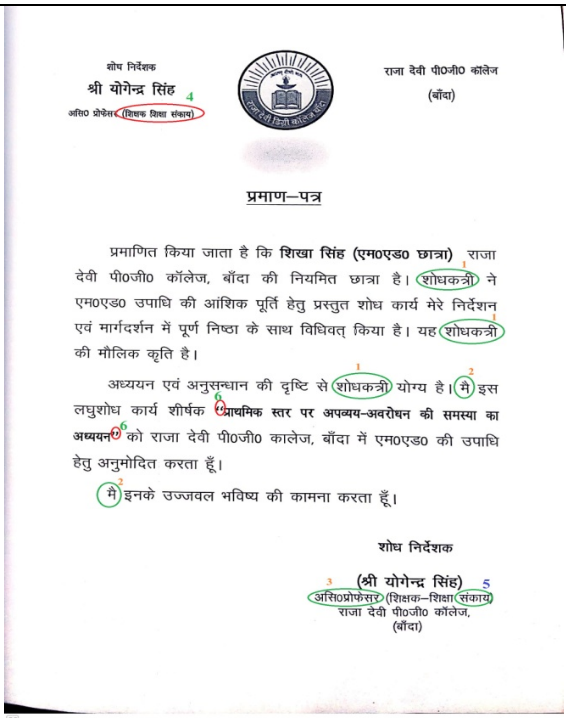
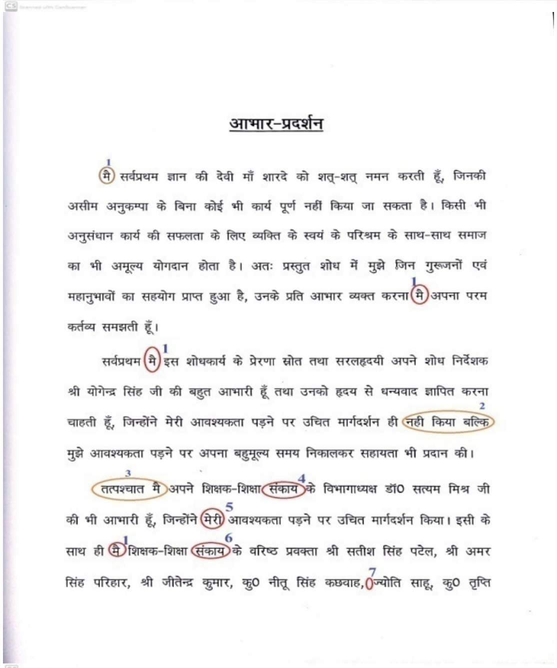
Research Report Evaluation Consolidated Table				
	Criteria	Score Rule (points)	Not Applicable (NA)	Obtained Score
1.	**Introduction**	**Max score = 6**		**4**
2.	**Review of Literature**	**Max score = 9**		**2**
3.	**Objectives and Hypotheses**	**Max score = 12**		**6**
4.	**Research Design**	**Max score = 3**		**1**
5.	**Variables**	**Max score = 3**		**2**
6.	**Research Instruments**	**Max score = 5**		**0**
7.	**Sample**	**Max score = 3**		**0**
8.	**Data Collection and Data Analysis**	**Max score = 4**		**0**
9.	**Findings and Implications**	**Max score = 5**		**1**
10.	**Summary and Conclusion**	**Max score = 3**		**1**
11.	**Referencing**	**Max score = 5**		**1**
12.	**Annexure**	**Max score = 3**		**0**
13.	**General Indicators**	**Max score = 4**		**1**
	Grand Total =	**65**		**19**

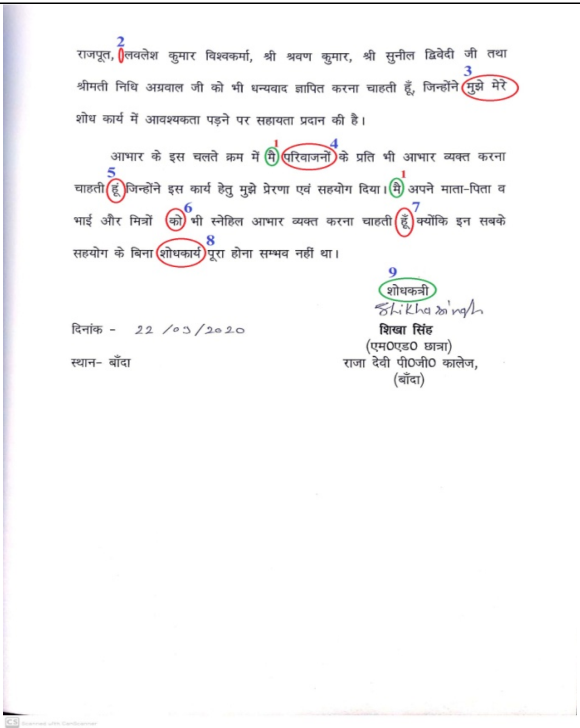
(Table की प्रत्येक मापदण्ड (Criteria) का विस्तृत विवेचन ऊपर के पृष्ठों पर दिया गया है।)

इस लघु शोध का अन्तिम आंकिक समीक्षात्मक मूल्यांकन करने पर 65 अंक में से केवल 19 अंक अर्थात केवल 29.23 अंक प्राप्त हुए हैं, जोकि इस स्तर पर बहुत ही सन्तोषजनक हैं।

शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त कुछ अन्य गलतियाँ-

अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट	अशुद्ध शब्दों का सही रूप
 प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, को मास्टर ऑफ एजूकेशन उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध 2018-20 शोध निर्देशक श्री योगेन्द्र सिंह असि0 प्रोफेसर शोधकत्री शिखा सिंह एम0एड0(छात्रा) शिक्षक-शिक्षा संकाय राजा देवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा (उत्तर प्रदेश)	1. , 2. झाँसी (कॉमा का अनुचित प्रयोग) 3. की 4. एजुकेशन 5. - 6. शोधकर्त्री 7. स्पेस दिया जाना चाहिए था। 8. विभाग 9. पोस्ट ग्रेजुएट **नोट-** मुख्य पृष्ठ पर कॉलेज का पूरा नाम लिखा जाना चाहिए।
 घोषणा-पत्र मै "शिखा सिंह" पुत्री श्री श्याम प्रताप सिंह एवं सुमन सिंह (एम0एड0 छात्रा 2018-20) राजा देवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा घोषणा करती हूं कि प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध जिसका शीर्षक "प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन" है, एम0एड0 की उपाधि हेतु राजा देवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा में प्रस्तुत कर रही हूं। यह लघुशोध कार्य आदरणीय योगेन्द्र सिंह जी के निर्देशन में किया गया है। लघुशोध प्रबन्ध में जो प्रदत्त प्रस्तुत किया जाता है, कि कोई भी सूचना या तथा असत्य नहीं है। और न ही छिपाये गये है। यह मेरी मौलिक कृति है तथा इसके पूर्व यह शोध0प्रबन्ध न तो कहीं प्रस्तुत किया गया है और न ही कहीं प्रकाशित किया गया है। शोधकत्री (शिखा सिंह) एम0एड0 (छात्रा) राजा देवी पी0जी0 कालेज (बाँदा) दिनांक - 22/03/2020 स्थान- बाँदा	1. मैं, 2. इनवर्टेड कॉमा का अनुचित प्रयोग 3. नाम हटा देना है। **नोट-** माता-पिता में से किसी एक का नाम लिखा जाना चाहिए। 4. हूँ 5. लघु-शोध 6. हूँ 7. लघु-शोध 8. प्रस्तुत सूचना या तथ्य 9. निरर्थक चिह्न 10. छिपाये गए हैं।  आधुनिक हिंदी में दिखायें, हटायें आदि के स्थान पर दिखाएं, हटाएं आदि का प्रयोग होता है। यदि ये और ए एक साथ अंत में आएं जैसे किये गए हैं तो पहले स्थान पर ये और दूसरे स्थान पर ए का प्रयोग होता है। 11. – 12. शोधकर्त्री

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
शोध निर्देशक
श्री योगेन्द्र सिंह
असि0 प्रोफेसर (शिक्षक शिक्षा संकाय)
राजा देवी पी0जी0 कॉलेज
(बाँदा)
<u>प्रमाण–पत्र</u>
प्रमाणित किया जाता है कि शिखा सिंह (एम0एड0 छात्रा) राजा देवी पी0जी0 कॉलेज, बाँदा की नियमित छात्रा है। शोधकत्री ने एम0एड0 उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध कार्य मेरे निर्देशन एवं मार्गदर्शन में पूर्ण निष्ठा के साथ विधिवत् किया है। यह शोधकत्री की मौलिक कृति है।
अध्ययन एवं अनुसन्धान की दृष्टि से शोधकत्री योग्य है। मै इस लघुशोध कार्य शीर्षक "प्राथमिक स्तर पर अपव्यय-अवरोधन की समस्या का अध्ययन" को राजा देवी पी0जी0 कालेज, बाँदा में एम0एड0 की उपाधि हेतु अनुमोदित करता हूँ।
मै इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।
शोध निर्देशक
(श्री योगेन्द्र सिंह)
असि0प्रोफेसर (शिक्षक–शिक्षा संकाय)
राजा देवी पी0जी0 कॉलेज,
(बाँदा)</td>
<td>1. शोधकर्त्री
2. मैं
3. असि. प्रोफेसर
4. शिक्षक-शिक्षा विभाग
5. विभाग
6. इनवर्टेड़ कॉमा का अनुचित प्रयोग।</td></tr>
<tr><td>
<u>आभार-प्रदर्शन</u>
मै सर्वप्रथम ज्ञान की देवी माँ शारदे को शत्-शत् नमन करती हूँ, जिनकी असीम अनुकम्पा के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं किया जा सकता है। किसी भी अनुसंधान कार्य की सफलता के लिए व्यक्ति के स्वयं के परिश्रम के साथ-साथ समाज का भी अमूल्य योगदान होता है। अतः प्रस्तुत शोध में मुझे जिन गुरूजनों एवं महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उनके प्रति आभार व्यक्त करना मै अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।
सर्वप्रथम मै इस शोधकार्य के प्रेरणा स्रोत तथा सरलहृदयी अपने शोध निर्देशक श्री योगेन्द्र सिंह जी की बहुत आभारी हूँ तथा उनको हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करना चाहती हूँ, जिन्होंने मेरी आवश्यकता पड़ने पर उचित मार्गदर्शन ही नही किया बल्कि मुझे आवश्यकता पड़ने पर अपना बहुमूल्य समय निकालकर सहायता भी प्रदान की।
तत्पश्चात मै अपने शिक्षक-शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ0 सत्यम मिश्र जी की भी आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी आवश्यकता पड़ने पर उचित मार्गदर्शन किया। इसी के साथ ही मै शिक्षक-शिक्षा संकाय के वरिष्ठ प्रवक्ता श्री सतीश सिंह पटेल, श्री अमर सिंह परिहार, श्री जीतेन्द्र कुमार, कु0 नीतू सिंह कछवाह, ज्योति साहू, कु0 तृप्ति</td>
<td>1. मैं
2. नहीं किया; बल्कि
3. तत्पश्चात्
4. विभाग
5. निरर्थक शब्द
6. विभाग
7. कु. (नाम के आगे सम्मानजनक शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए)</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>अशुद्ध शब्दों का स्क्रीनशॉट</th><th>अशुद्ध शब्दों का सही रूप</th></tr>
<tr><td>
राजपूत, 2 लवलेश कुमार विश्वकर्मा, श्री श्रवण कुमार, श्री सुनील द्विवेदी जी तथा श्रीमती निधि अग्रवाल जी को भी धन्यवाद ज्ञापित करना चाहती हूँ, जिन्होंने 3 मुझे मेरे शोध कार्य में आवश्यकता पड़ने पर सहायता प्रदान की है।
आभार के इस चलते क्रम में 1 मै 4 परिवाजनों के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहती 5 हूं जिन्होंने इस कार्य हेतु मुझे प्रेरणा एवं सहयोग दिया। 1 मै अपने माता-पिता व भाई और मित्रों 6 को भी स्नेहिल आभार व्यक्त करना चाहती 7 हूँ क्योंकि इन सबके सहयोग के बिना 8 शोधकार्य पूरा होना सम्भव नहीं था।
9 शोधकत्री
Shikha Singh
शिखा सिंह
(एम0एड0 छात्रा)
राजा देवी पी0जी0 कालेज,
(बाँदा)
दिनांक - 22 /03/2020
स्थान- बाँदा</td><td>1. मैं
2. श्री (नाम के आगे सम्मानजनक शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए था।)
3. मुझे (दोनों में से किसी एक का प्रयोग किया जाना चाहिए था।)
4. परिवारजन
5. हूँ
6. का निरर्थक शब्द
7. हूँ;
8. शोध-कार्य
9. शोधकर्त्री</td></tr>
</table>

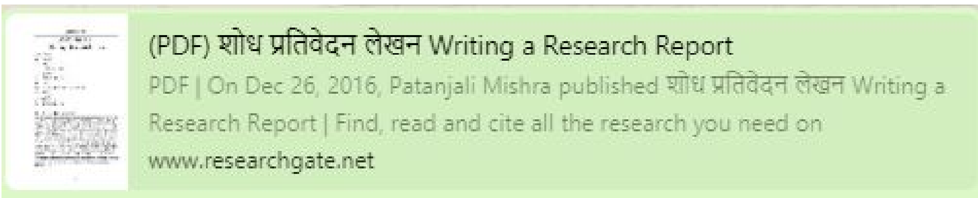
निष्कर्ष-

शोध एक उद्देश्यपूर्ण, सुव्यवस्थित तथा बौद्धिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी सैद्धान्तिक अथवा व्यावहारिक समस्या के समाधान का प्रयास किया जाता है। शोध ज्ञान के विविध पक्षों में गहनता तथा सूक्ष्मता लाता है और जिज्ञासा की सन्तुष्टि करता है। अनुसन्धान बड़ी गम्भीरतापूर्वक किया जाने वाला कार्य है। आज भारत में अनुसन्धान की गिरती दशा का यही कारण है कि अनुसन्धान कार्य गम्भीरतापूर्वक नहीं किया जा रहा है और यह लघु-शोध कार्य इसका जीता जागता प्रमाण है। इस लघु-शोध कार्य में बहुत सी छोटी-छोटी अशुद्धियाँ है, जो कि शोधकर्त्री द्वारा इस स्तर पर नहीं की जानी चाहिए थीं। इस शोध कार्य के अन्तर्गत की गयी अशुद्धियों पर शोधकर्त्री द्वारा ही नहीं बल्कि पर्यवेक्षक द्वारा भी ध्यान नहीं दिया गया, जो कि एक शिक्षक के लिए निन्दनीय कार्य है। इस शोध कार्य की समीक्षा करने के उपरान्त ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में कितनी लापरवाही हो रही है। इस लापरवाही का एक कारण यह भी है कि- महाविद्यालय में शिक्षकों की नियुक्ति। शिक्षकों की नियुक्ति UGC के मानक के अनुरूप की जानी चाहिए। राज्य सरकार द्वारा संचालित निजी महाविद्यालयों प्रायः यह देखा जाता है कि नियुक्ति किसी अन्य शिक्षक की होती है, लेकिन या तो वह अनुपस्थित रहता है या उनके स्थान पर कोई अन्य शिक्षक पढ़ाता मिलता है; जिसको अपने विषय का सम्पूर्ण ज्ञान भी नहीं होता है। ऐसे शिक्षक शिक्षा के स्तर को गर्त में गिरा देते हैं। अतः विषय-विशेषज्ञ को ही

सम्बन्धित विषय पढ़ाने का उत्तर दायित्व सौंपा जाना चाहिए। साथ ही उच्च शैक्षणिक संस्थानों की मान्यता भी UGC के मानकों के अनुरूप होनी चाहिए; जिससे कि विद्यार्थियों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान की जा सके और शिक्षा के स्तर को भी ऊँचा उठाया जा सके। इस लघु-शोध कार्य को किसी भी प्रकार से शोध कार्य की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। यह लघु-शोध कार्य सिर्फ औपचारिकता का निर्वहन मात्र है।

सन्दर्भ

सिंह, शिखा (2020)। *प्राथमिक स्तर पर अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का अध्ययन।* अप्रकाशित लघु-शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।



<https://www.researchgate.net/publication/322070597_sodha_prativedana_lekhana_Writing_a_Research_Report>



<https://www.slideshare.net/meghana353/research-report-writing>



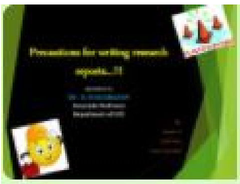
<https://www.google.com/amp/s/www.formpl.us/blog/amp/research-report>



<https://www.google.com/amp/s/www.questionpro.com/blog/research-reports/amp/>

Research Report: Introduction, Definition and Report Format
ADVERTISEMENTS: "Research report is a research document that contains basic aspects of the research project". Introduction: Mostly, research work is presented in a written form.
www.yourarticlelibrary.com

<https://www.yourarticlelibrary.com/marketing/research-report-introduction-definition-and-report-format/48713>



Research report
precautions for writing research reports
www.slideshare.net

<https://www.slideshare.net/mobile/pretiancilla/research-report-63386559>

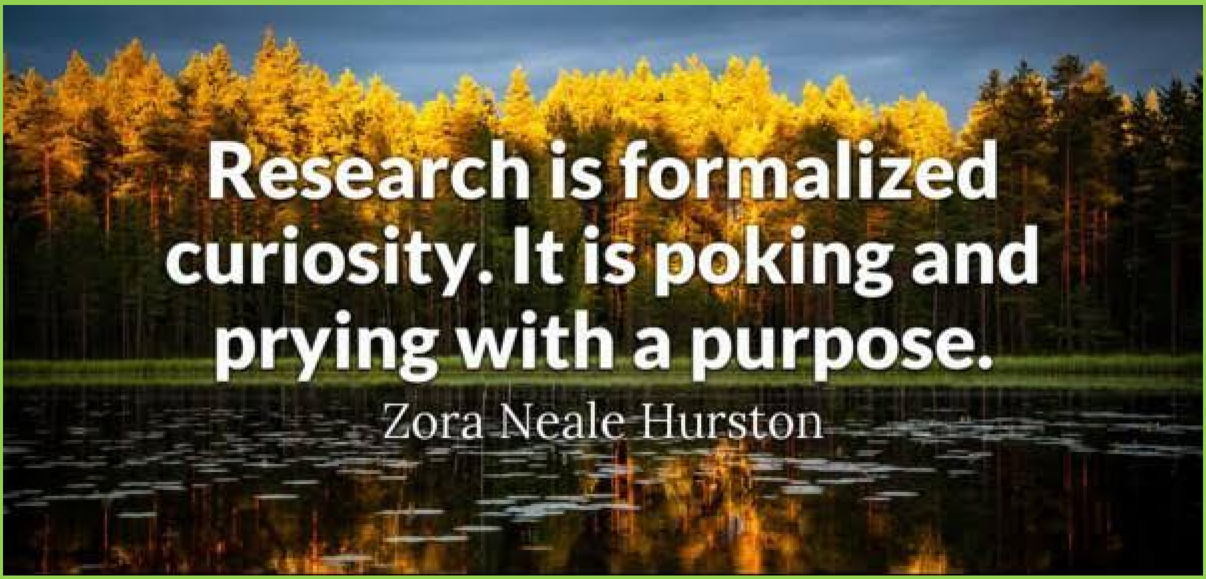


A presentation on research report writing.
This power point presentation is related to the topic of research report writing. It involves meaning of report writing, its functions
www.slideshare.net

<https://www.slideshare.net/mobile/PRIYANKAVP4/a-presentation-on-research-report-writing>

शोध प्रविधि Research Methodology
A blog about Language Literature Culture Social Issue and Knowledge
deoshankarnavin.blogspot.com

<https://deoshankarnavin.blogspot.com/2017/01/blog-post.html>



ISBN 978-93-5526-892-1
9 789355 268921 >